हँसती दुनिया

₹10/-

वर्ष 41• अंक 11 नवम्बर 2014

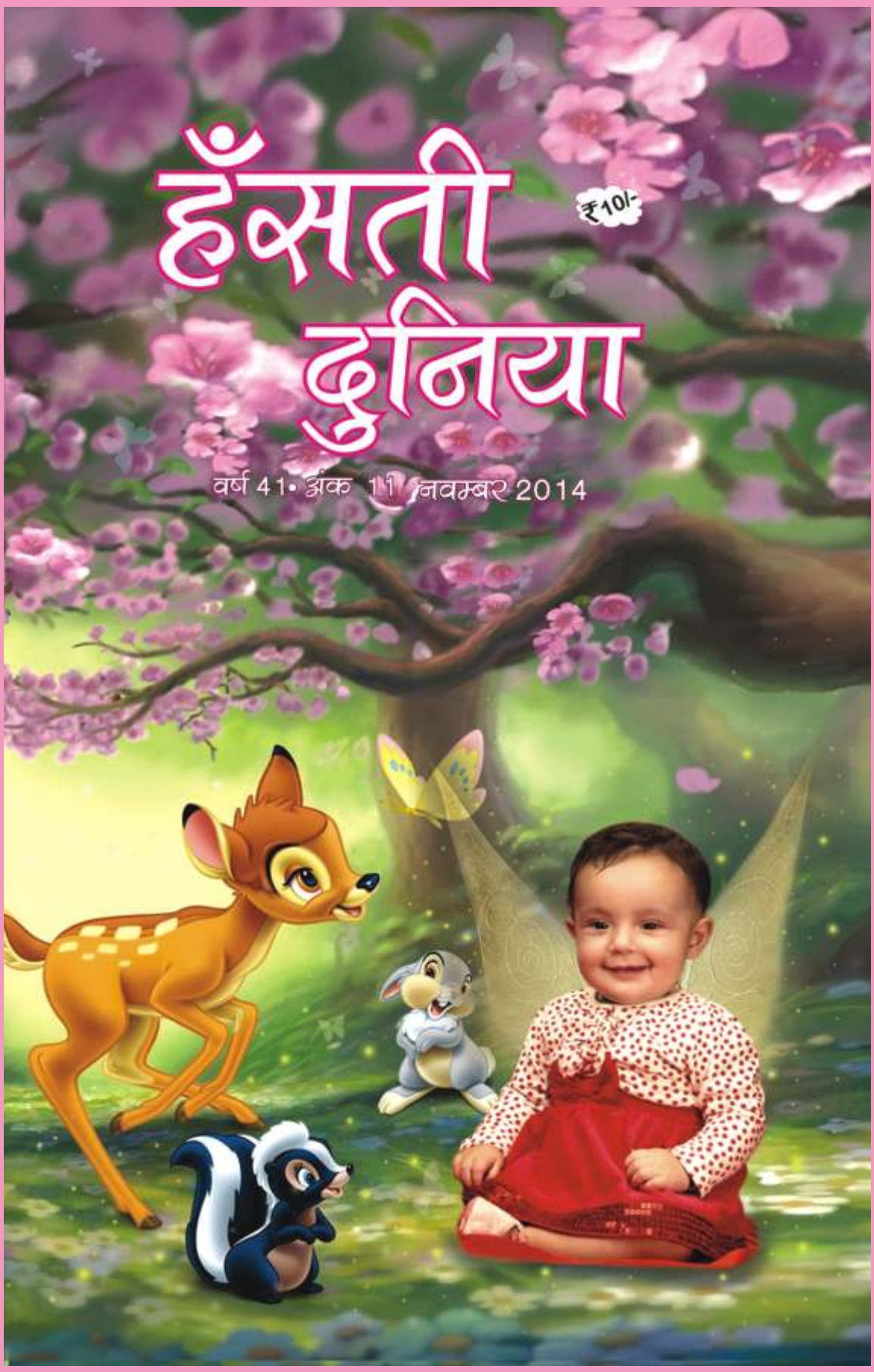

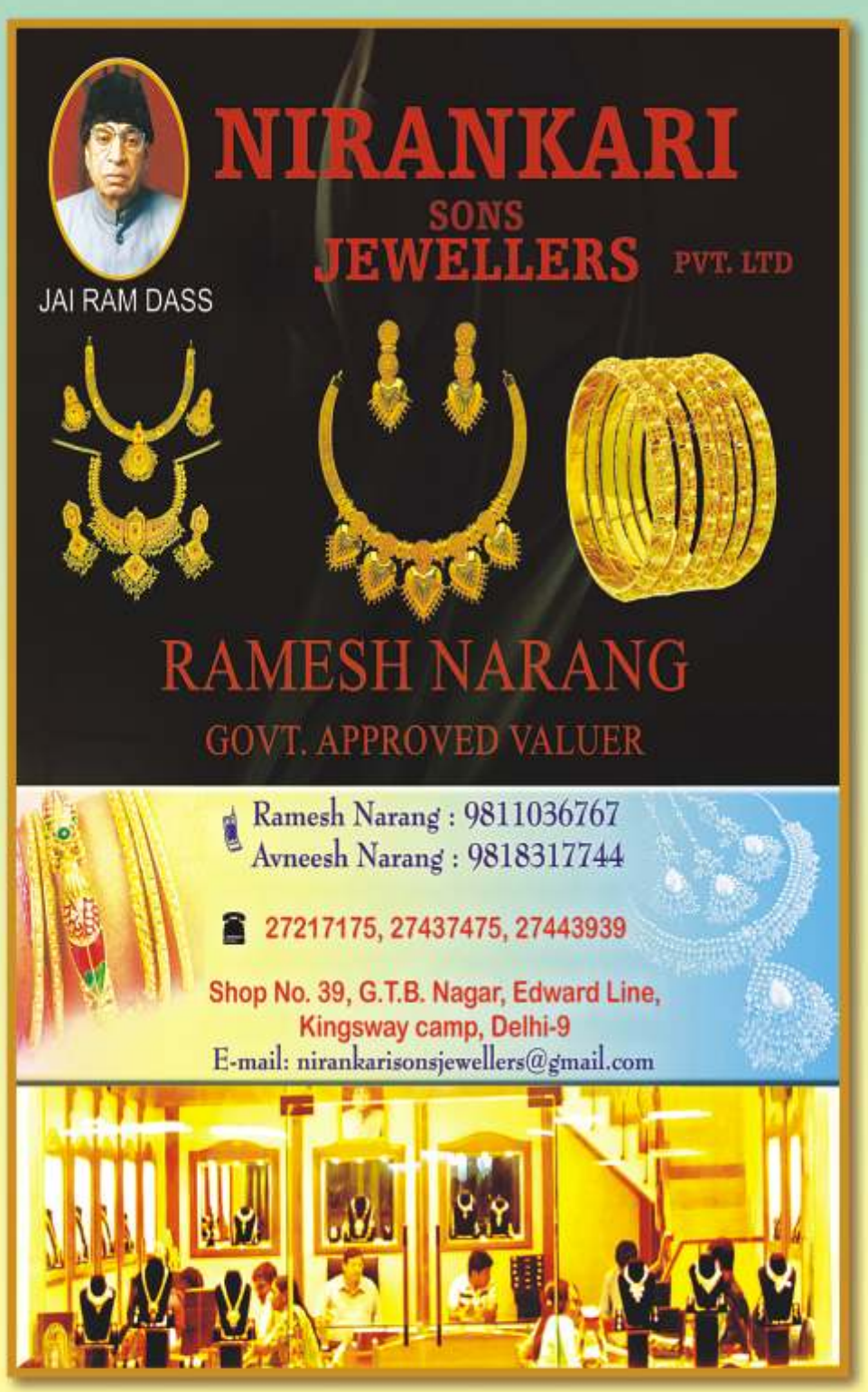
NIRANKARI
SONS
JEWELLERS PVT. LTD
JAI RAM DASS
RAMESH NARANG
GOVT. APPROVED VALUER
Ramesh Narang : 9811036767
Avneesh Narang : 9818317744
27217175, 27437475, 27443939
Shop No. 39, G.T.B. Nagar, Edward Line,
Kingsway camp, Delhi-9
E-mail: nirankarisonsjewellers@gmail.com

वर्ष 41
अंक 11

हँसती दुनिया

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

नवम्बर
2014

स्तम्भ

सबसे पहले 4
अनमोल वचन 6
वर्ग पहेली 10
समाचार 18
भैया से पूछो 32
पढ़ो और हँसो 46
रंग भरो परिणाम 48
जन्म दिन मुबारक 52–53
आपके पत्र मिले 65

चित्रकथा

चम्पू 54
बच्चों की दुनिया 58

सम्पादक
विमलेश आहूजा
सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

कार्यालय फोन :
011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail:
editorial@nirankari.org

कहानियां

चतुराई का फल — सन्नी गुलाटी 7
पीड़ा के चिन्ह — कमल सोगानी 9
लगान — किशोर डैनियल 21
सच्चा सेवक — सोनी निरंकारी 23
गुलाब की महक — डॉ. दर्शन सिंह आश्ट 27
छोटी सी बात — महेन्द्र सिंह शेखावत 37
लगन — दिनेश राय 60

कविताएं

फूलों से मुस्काते — परशुराम शुक्ल 5
मेहनत का फल मिठा होता — राजेन्द्र निशेश 11
समय — डॉ. दिनेश चमोला 19
इनको अपना मानें — डॉ. परशुराम शुक्ल 34
दो बाल कविताएं — अंकुश्री 42
नदी — मंजु दवे 51
गिलहरी — हरजीत निषाद 59
चिड़िया — हरप्रसाद 59

विशेष/लेख

...ममतामयी निरंकारी राजमाता कुलवन्त कौर जी — हरजीत निषाद 12
शांत स्वभाव दीर्घजीवी–कछुआ — उमा सिंह 20
सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी — विकास अरोड़ा 26
दिलचस्प दुनिया जानवरों के दांतों की — दीपांशु जैन 40
वह मौत को हराकर खेलों की दुनिया में चमका — वीना श्रीश्रीमाल 44
प्यारा और सुन्दर परिन्दा पपीहा — कमल सोगानी 62

COUNTRY	ANNUAL	3 YEARS	6 YEARS	10 YEARS	LM (20YEARS)
INDIA/NEPAL	Rs. 100	Rs. 250		Rs. 600	Rs. 1000
UK	£ 12	—	£ 60	£ 100	£ 150
EUROPE	€ 15	—	€ 75	€ 125	€ 200
USA	$ 20	—	$ 100	$ 150	$ 250
CANADA/AUSTRALIA	$ 25	—	$ 125	$ 200	$ 300

OTHER COUNTRIES # Equillant to U.S. Dollars as mentioned above

प्रकाशक एवं मुद्रक सी. एल. गुलाटी, सम्पादक विमलेश आहूजा ने सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9 के लिये, हरदेव प्रिंटर्ज, निरंकारी कालोनी, दिल्ली –9 से मुद्रित करवाया।

सबसे पहले

गणित के अध्यापक अपनी कक्षा में बच्चों को गणित पढ़ा रहे थे। पढ़ाते–पढ़ाते एक प्रश्न को हल करने का तरीका बताते हुए कहने लगे– 'पहले मान लें कि मूलधन 100 है और साथ में एक फार्मूला बताया कि इसको करने से प्रश्न का हल हो जाएगा।' लेकिन बच्चे कहने लगे कि हम कैसे मान लें; मानने से क्या होगा और क्यों मान लें?

अध्यापक ने बड़े ही प्यार से बच्चों को समझाया कि आप मुझे अध्यापक मानते हैं या नहीं; बच्चों ने कहा 'जी हाँ'।

फिर अध्यापक कहने लगे, ''आप क्यों मानते हैं कि मैं आपका अध्यापक हूँ।'' बच्चे कहने लगे कि आप इस स्कूल में कई वर्षों से हमें पढ़ाते आ रहे हैं। इसलिए हम आपको अध्यापक मानते हैं।

तब अध्यापक ने कहा कि आप एक बार मान लें कि मूलधन 100 है। मान लेने के बाद ही निश्चित फार्मूला लागू हो सकेगा और आपको अपने प्रश्न का उचित हल प्राप्त हो जायेगा। फिर अध्यापक ने 'ब्लैक–बोर्ड' पर लिखकर समझाया कि मैंने माना कि मूलधन 100 है और फिर फार्मूला लगाकर प्रश्न को हल कर के दिखाया। फिर सभी बच्चे जान गये कि मानने से ही जानना सम्भव है।

इसी प्रकार से हम अपने जीवनकाल में अपने माता–पिता, गुरुजनों की शिक्षा को मान लेते हैं और जिस तरह से वे हमें निर्देश देते हैं और उन निर्देशों का हम पालन करते हैं तभी हम जान पाते हैं कि मानने में ही हित निहित है।

इसी भाव को कि 'एक को मानो, एक को जानो और एक हो जाओ', को साकार करने हेतु हर वर्ष नवम्बर में निरंकारी सन्त समागम होता है। यहाँ पर गुरु की मान कर, सत्य को जानकर, सत्य के साथ एकाकार होने की कला सिखाई जाती है। यहाँ सभी बड़े–छोटे के भाव से ऊपर उठकर एक–दूसरे के चरणों में नत–मस्तक होकर अपना आदर भाव प्रकट करते हैं और एक दूसरे को पहले खिलाकर खाने की प्रेरणा भी यहीं से मिलती है और यहाँ यही संदेश भी दिया जाता है :–

एक को जानो, एक को मानो और एक हो जाओ। –विमलेश आहूजा

बाल दिवस (14 नवम्बर) पर विशेष : डॉ. परशुराम शुक्ल

फूलों से मुस्काते

जरा निकट से देखो बच्चे,
फूलों से मुस्काते।

ऊँच–नीच का भेद न जानें।
सारे जग को अपना मानें।
थोड़ा इनसे प्यार करो तो,
हँसते और हँसाते ।
फूलों से ...

इन बच्चों का हँसना कविता।
इन बच्चों का रोना कविता।
ये बच्चे कुछ भी करते हैं,
तो कविता बन जाते।
फूलों से ...

इनका भोलापन कहता है,
बच्चों में ईश्वर रहता है।
केवल कविगण इनको समझे,
ये इनके मन भाते।
फूलों से ...

जरा निकट से देखो बच्चे,
फूलों से मुस्काते।

अनमोल वचन

संग्रहकर्ता : पृथ्वीराज (घोण्डा, दिल्ली)

- आशा ईश्वर के द्वारा मानव को दिया गया सुन्दर उपहार है जो हमें निरंतर सीखने और प्यार भरा जीवन जीने का मार्ग दिखाती है।
- विजेता वे लोग नहीं हैं जो कभी पराजित नहीं हुए बल्कि विजेता वे हैं जिन्होंने हार के डर से मैदान को छोड़ देने की गलती नहीं की।
- अग्नि सोने को परखती है और विपत्ति वीर पुरुषों को।
- ज्ञान धन से उत्तम है क्योंकि धन की रक्षा तो तुम्हें करनी पड़ती है परन्तु तुम्हारी रक्षा ज्ञान करता है।
- किसी भी महान कार्य के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता आत्मविश्वास की है।
- मानव का सर्वप्रथम कर्त्तव्य है – मानव की सेवा।
- दुर्जनों का सामना सहनशीलता से करो।
- भाग्य को वही कोसते हैं जो कर्महीन होते हैं।
- अत्याचार करने वाला उतना दोषी नहीं जितना उसे सहन करने वाला।
- बहुत बोलने के बजाय बहुत सुनना अधिक अच्छा है।
- हम जितना अध्ययन करेंगे उतना ही हमें अपने अज्ञान का बोध होता जाएगा।
- अपने अवगुण अपने को ही दुःख देते हैं।
- विद्यार्थियों का चरित्र–निर्माण नैतिक शिक्षा से ही सम्भव है।
- जीवन में दुख और सुख तो आते ही रहते हैं परन्तु जो अपना धैर्य खो बैठता है वह अपना सब कुछ खो बैठता है।
- अच्छे मित्र व अच्छा चरित्र व्यक्ति को उन्नति की ओर ले जाते हैं।

प्रेरक–प्रसंग : सन्नी गुलाटी

चतुराई का फल

एक राजा था। अपने राज्य की प्रजा को खुशहाल रखने के लिए वह प्रयास करता रहता था। वह योग्य और नितिवान मंत्रियों को ही राज्य की सेवा में रखना चाहता था।

एक दिन राजा ने अपने तीन मंत्रियों को राजदरबार में बुलाया। राजा ने तीनों मंत्रियों को आदेश दिया कि वे एक–एक थैला लेकर बगीचे में जाएं और वहाँ से अच्छे–अच्छे फल तोड़ कर थैला भर कर वापस आएं। मंत्रियों को राजा का यह आदेश अच्छा न लगा। उनके अहंकार को ठेस पहुँची, वे सोचने लगे कि हम मंत्री हैं, कोई मजदूर नहीं।

राजा का आदेश था, इसलिए मंत्रियों को राजा की बात माननी पड़ी। पहले मंत्री ने सोचा कि चलो अब फल तोड़ना ही है तो अच्छे और स्वादिष्ट फल तोड़ कर थैला भर लिया जाए।

दूसरे मंत्री ने सोचा कि थैला भरकर फल ले जाना है, तो जो भी कच्चे–पक्के फल मिलते हैं उनको भर लेता हूँ। राजा पूछेगा तो कह दूंगा कि बगीचे में फल ही ऐसे थे।

तीसरे मंत्री ने सोचा– कौन इतनी सिरदर्दी ले और उसने थैले को घास–फूस से भर कर उसके ऊपर थोड़े से फल रख लिये और थैला भरकर वापस आ गया।

राजा ने तीनों मंत्रियों को बुलाया और कहा कि तुम तीनों कल सुबह अपने–अपने फल वाले थैलों के साथ राजदरबार में उपस्थित हों।

अगली सुबह तीनों मंत्री राजा के दरबार में उपस्थित हुए। राजा ने उनके द्वारा राजकार्य में की जाने वाली लापरवाही और गलतियों की सजा सुनाते हुए उन तीनों को एक महीने के लिए शहर से दूर जंगल में बनी जेल में बन्द करवा दिया। साथ ही राजा ने कहा कि जो तुम फलों का थैला भरकर लाये हो, तुम्हें उससे ही एक महीने अपना जीवन निर्वाह करना है। जेल में कोई भी इनसे एक महीने से पहले नहीं मिलेगा।

अब जिस मंत्री ने राजा की बात मानकर अपने थैले में अच्छे और मीठे फल ईमानदारी से भरे थे वह पूरे महीने आराम से अपना जीवन निर्वाह करता रहा।

दूसरा मंत्री जिसने कच्चे–पक्के व सड़े हुए फलों से थैला भरा था। वह कुछ दिनों बाद बीमार पड़ गया। एक महीने बाद जब वह बाहर आया तब वह काफी बीमार पाया गया, जिससे पता चला था कि उसका एक महीने का जीवन कष्टदायक रहा।

तीसरा मंत्री जिसने बगीचे से केवल घास–फूस और कुछ फलों से ही थैला भर लिया था, वह सजा सुनने के बाद दंग रह गया। वह जेल में कुछ दिनों तक ही जीवित रह पाया। जब एक महीने बाद उसकी जेल का दरवाजा खोला गया तो वह मंत्री मृत पाया गया।

कहानी की सत्यता जो भी रही हो परन्तु इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि यदि हम अपने माता–पिता और गुरुजनों की बात ईमानदारी से बिना किसी चालाकी और चतुराई के मान लेते हैं तो जीवन खुशहाल व आरामदायक हो जाता है, नहीं तो दूसरे अथवा तीसरे मंत्री की तरह परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ■

पीड़ा के चिन्ह

जापान के एक फौजी अफसर की एक टांग युद्ध के दिनों में कट गई थी। उन्होंने नकली टांग लगा रखी थी। फिर भी वे बड़ी फुर्ती से कार्य किया करते। उनकी बहादुरी देखकर फौजीगण यही कहा करते– यह जीवन तो देश के लिए मर मिटने के लिए है। देश की रक्षा करना हमारा सबसे बड़ा धर्म है।

एक बार वह फौजी अफसर अस्पताल में घायल सैनिकों को देखने पहुँचे, वहाँ उन्होंने देखा, कई सैनिकों के हाथ–पैर कटे हैं।

वे एक ऐसे सैनिक के पास पहुँचे, जिसकी दोनों टांगे बम विस्फोट के कारण चीथड़ा–चीथड़ा होकर कट चुकी थी। उन्होंने उस सैनिक का हौंसला बनाए रखने के लिए कहा, "नकली टांग का फायदा यह है कि चोट लगने पर महसूस नहीं होती।"

यह सुनकर उन्होंने अपना बैंत एक चौकीदार को देकर कहा कि इसे जोर से मेरी टांग पर मारो। उसने बहुत जोर से बैंत मारी।

अफसर ने जोर–जोर से हँसते हुए कहा, "देखो, मुझे कोई असर नहीं हुआ।"

इस पर सब हँस पड़े। कमरे से बाहर निकलते ही उनके मुख से पीड़ा के चिन्ह उभर आए। उनके अन्य साथियों ने कारण पूछा तो उन्होंने कहा, "उसने गलत टांग पर बैंत मार दिया था।"

–तो फिर आप कुछ बोले क्यों नहीं?

–यदि मैं अपने मुख पर पीड़ा के चिन्ह उभार लेता तो तमाम घायल सैनिकों का हौंसला टूट जाता। दिलों में हौंसला बुलन्द रखने के लिए ही मैं चुप रहा, ताकि घायलों में देश के प्रति कर्तव्यता की निष्ठा बनी रहे।

यह सुनकर उनके साथी गहन अचरज में पड़ गये, बोले– "वास्तव में इस देश को तुम जैसे ही महान अफसर की आवश्यकता है जो घायलों को भी जीने के नये अंदाज सिखाता है।

बाद में इसी फौजी अफसर को फौजी कमाण्डर बना दिया गया।

वर्ग पहेली

– प्रस्तुति :
विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

बाएं से दाएं →

1. सीप से निकलने वाला एक बहुमूल्य पत्थर।
2. भगवान श्रीकृष्ण ने जिस पांडव को महाभारत का युद्ध शुरू होने से पहले गीता का ज्ञान दिया था।
4. संसार की सबसे ऊँची पर्वत चोटी माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली संसार की पहली महिला ..... ताबेई थी।
5. पुण्य का विपरीत शब्द।
7. नाइजीरिया देश की राजधानी।
9. ..... जल गई पर ऐंठ न गई यानि बर्बादी के बाद भी शेखी बरकरार है।
10. शुद्ध शब्द छांटिए : (पशु / पशू)
11. सौ में से घटा सत्तरह : .....
13. प्रसिद्ध भारतीय संगीतकार ..... देव बर्मन को 'पंचम' के नाम से भी जाना जाता है।
14. इटली की राजधानी।
15. जम्मू और कश्मीर राज्य की मुख्य भाषा।

ऊपर से नीचे ↓

1. 'मोटा' की भाववाचक संज्ञा।
2. अकोला और अल्मोड़ा में से जो शहर महाराष्ट्र में है।
3. राष्ट्रीय अखण्डता के लिए सर्वश्रेष्ठ फिल्म पुरस्कार का नाम प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री ..... दत्त के नाम पर रखा गया है।
6. जिस ऋषि ने गणेश का एक दाँत तोड़ा था।
8. इनमें से जो शहर गुजरात में है : शिमला, भोपाल, गोधरा, चेन्नई।
11. बाल गंगाधर ..... ने कहा था : स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।
12. बुलंद दरवाजा आगरा के नजदीक फतेहपुर ..... में स्थित है।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में है)

मेहनत का फल मीठा होता

बालगीत :
राजेन्द्र निशेश

जो कानों में मधु–रस घोले,
वे गीत सुनाते चले चलो;
नफ़रत की दीवार तोड़ कर
कदम बढ़ाते चले चलो।

भेद–भाव के बंधन तोड़ो,
बुरी बात से मुखड़ा मोड़ो;
सबकी पीड़ा हरते जाओ
मन से मन का नाता जोड़ो।

रूठों को भी गले लगा कर,
उनको अपनाते चले चलो;
नफ़रत की दीवार तोड़ कर
कदम बढ़ाते चले चलो।

पथ के कांटे चुनते जाना,
संकट से न तुम घबराना;
फौलादी मेहनत के संग–संग
मंजिल को अपनी पा जाना।

पतझर के सब पंख काट कर,
बगिया महकाते चले चलो;
नफ़रत की दीवार तोड़ कर
कदम बढ़ाते चले चलो।

पूरे मन से करो पढ़ाई,
इसमें ही है खूब भलाई;
बीता समय न मुड़ कर आता
लाभ उठाने में चतुराई।

मेहनत का फल मीठा होता,
मेहनत करते चले चलो;
नफ़रत की दीवार तोड़ कर
कदम बढ़ाते चले चलो।

प्रेरक विभूति : हरजीत निषाद

समतामयी-ममतामयी कुलवंत

माँ का प्यार अनमोल है। माँ के प्यार की कोई सीमा नहीं है। माँ साया बनकर बच्चे का साथ देती है। बच्चे को चोट लगे तो दर्द माँ के सीने में उठता है। माँ बच्चे को पाल–पोस कर बड़ा करती है। छोटे बच्चे चलने–फिरने में असमर्थ होते हैं तो माँ उन्हें खाना–पीना, चलना–फिरना, सोना–जागना सब सिखाती है। थोड़ा बड़ा होने पर मां बच्चे को स्कूल भेजती है। सुबह जल्दी उठकर नाश्ता तैयार करके बच्चे का टिफन सजाती है। माँ बच्चे का हमेशा ध्यान रखती है।

संसार में कौशल्या और यशोदा जैसी भी माताएं हुई हैं जिनकी गोद में भगवान स्वयं पले–बढ़े हैं और बाल–लीलाएं की हैं। बच्चों, हम आपको ऐसी ही परमममतामयी निरंकारी राजमाता जी की कहानी बता रहे हैं जिनका वात्सल्य भरा प्यार केवल अपने बेटे–बेटियों तक ही सीमित नहीं था बल्कि वो सम्पूर्ण मानव जाति के प्रति मातृत्व भाव से भरा हुआ था। निरंकारी राजमाता जी का जन्म 1 जनवरी, 1931 को अविभाजित भारत के जिला

निरंकारी राजमाता कौर जी

कैमल पुर (जो अब पाकिस्तान में है) में पिता मन्ना सिंह जी और माता सोमावन्ती जी के घर में हुआ। माता पिता ने इनका नाम कुलवन्त रखा। मन्ना सिंह जी का परिवार धार्मिक प्रवृत्ति वाला था। रोज गुरुद्वारा जाना और परमात्मा की स्तुति करना परिवार का नियम था।

कुलवन्त कौर जी जब 8 वर्ष की ही थीं तब बाबू महादेव सिंह जी ने उन्हें ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया और शहनशाह बाबा अवतार सिंह जी से उन्हें ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हो गई। राजमाता जी की रुचि गुरवाणी पढ़ने में शुरु से ही थी

यही कारण है कि जब इन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ तो ये प्रसन्नता से भर उठीं और तभी से सेवा, सुमिरण, सत्संग से जुड़ गईं। बच्ची कुलवन्त का स्वभाव इतना पावन और सरल था कि जब इन्होंने अपने माता–पिता से कहा कि मुझे सद्गुरु की कृपा से ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हो गई है तो माता–पिता ने इनकी बात मानकर स्वयं भी ब्रह्मज्ञान की सौगात प्राप्त की।

22 अप्रैल, 1947 को इनका शुभ विवाह सद्गुरु बाबा अवतार सिंह जी के सुपुत्र गुरबचन सिंह जी से हो गया। इस दौरान हमारा देश विभाजित होने की कगार पर पहुँच गया। राजमाता जी भारत आ गईं और नई दिल्ली स्टेशन के निकट पहाड़गंज में शहनशाह जी और अपनी सासू मां जगतमाता बुद्धवंती जी के साथ रहकर महापुरुषों की सेवा में समय बिताने लगीं। 1962 में जब बाबा गुरबचन सिंह जी ने सद्गुरु रूप में सन्त निरंकारी मिशन की बागडोर संभाली तब से राजमाता जी सद्गुरु बाबा गुरबचन सिंह जी के संग रहकर दिन–रात सत्य का संदेश देने में योगदान देने लगीं।

आरम्भिक काल में राजमाता जी ने सेवादल की वर्दी पहनकर सेवा करके एक मिसाल कायम की और अपने इकलौते सुपुत्र श्री हरदेव सिंह जी एवं अपनी सुपुत्रियों

निरंजन जी, मोहिनी जी, जगजीत जी एवं बिन्दिया जी को सेवादल की वर्दी पहनकर सेवा करने की प्रेरणा दी।

सत्य की आवाज को विश्व भर में फैलाने का जो बीड़ा बाबा अवतार सिंह जी ने उठाया था उसे आगे बढ़ाने में राजमाता जी ने अति विशिष्ट योगदान दिया। आपने न केवल भारत के दूर–दराज के दुर्गम क्षेत्रों में जाकर संगतों को आशीर्वाद प्रदान किया बल्कि विश्व के अनेकों देशों की मानव कल्याण यात्राओं में अनवरत योगदान दिया। सन् 1967 में पहली बार बाबा गुरबचन सिंह जी के साथ दूर–देशों की यात्रा की और उनके साथ 1970 से 1978 तक विश्व कल्याण यात्राओं का यह सिलसिला लगातार जारी रहा।

वर्ष 1978 में जब सन्त निरंकारी मिशन को कुछ विपरीत परिस्थितियों से गुजरना पड़ा, उस समय भी आपने अत्यंत धैर्य और साहस तथा नीति को आधार बना कर जहाँ सद्गुरु बाबा गुरबचन सिंह जी का पूर्ण साथ दिया, वहाँ संगतों को धीरज, सहनशीलता तथा सद्भाव बनाए रखने की भी शिक्षा दी। वर्ष 1980 में आपके पति और मिशन के संरक्षक युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी के बलिदान के उपरांत भी संगतों को संयम में रहने तथा शान्तिपूर्वक सत्य के पैगाम को जन–जन तक पहुँचाने में जुटे रहने की प्रेरणा आपके कर्म एवं आचरण द्वारा ही प्राप्त हुई। आपने किसी भी परिस्थिति में कोई विपरीत कदम न उठाने की प्रेरणा प्रदान की।

सत्य–धर्म प्रचार के प्रति आपकी आस्था एवं कर्म से प्रेरित होकर 'विश्व धर्म संसद' की ओर से आपको 'धर्म रत्न' की उपाधि से विभूषित किया गया।

बाबा हरदेव सिंह जी के सद्गुरु रूप में प्रकट होने के बाद 1980 में देश के लगभग सभी प्रदेशों में जाकर संगतों को सत्य मार्ग पर अडिग रहने की दृढ़ता प्रदान की। इसी मंतव्य की पूर्णता हेतु आपने सद्गुरु बाबा जी के साथ यू.के., डेनमार्क, जर्मनी और ऑस्ट्रिया की यात्रा की। 1981, 1984 तथा 1985 में भी आप बाबा हरदेव सिंह जी के साथ विश्व कल्याण यात्राओं में सहभागी बनीं। 1986 से 2012 के दौरान पूज्य राजमाता जी ने प्रचार की रफ्तार को बढ़ाने के लिए स्वयं भी विश्व के अनेक देशों की यात्राएं कीं तथा सत्य–प्रेम और शान्ति–सद्भाव का संदेश प्रसारित किया।

84 वर्ष की आयु में भी निरंकारी राजमाता जी का सत्संग के प्रति उत्साह यथावत था। राजमाता जी आत्म उत्थान तथा समाज सुधार के प्रति हमेशा जागरूकता प्रदान करती रही हैं। आप कहती थीं – 'सबसे पहले अपना सुधार करें, अपने परिवार को, अपने बच्चों को हर प्रकार से साथ चलायें, संसारी कार्यों में भी और परमार्थ में भी। यदि हमारा कर्म सुन्दर बन जाये तो समाज भी सुन्दर बनेगा।'

समाज के प्रत्येक वर्ग, विशेषकर सेवादारों के जीवन को सुखद एवं खुशहाल बनाने के लिए आप निरन्तर उनके पारिवारिक कार्यक्रमों– शादी, जन्म–दिन, गृह–प्रवेश आदि के अवसर पर उनके साथ सम्मिलित हो जाती थीं तथा आवश्यकतानुसार उनकी हर प्रकार की सहर्ष सहायता करती थीं। अनेक जरूरतमंद परिवारों के बच्चों की शादियाँ आपने स्वयं करवाईं। अनेक परिवारों के गृहस्थ जीवन में आने वाली कठिनाईयों का

आप सहज ही समाधान कर दिया करती थीं। आप सदैव सद्गुरु से सभी के लिए सुखों की अरदास करती थीं। किसी सेवादार द्वारा हुई गलती पर आप पर्दा डालती थीं, लेकिन फिर से गलती न करने की शिक्षा भी प्रदान करती थीं।

कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करना आपके स्वभाव में रहा। समदृष्टि का भाव आपमें बहुत प्रबल था। आपने जरूरतमन्दों की हर प्रकार से आवश्यक मदद की और सदैव अपनेपन का भाव आगे रखा। माँ की ममता से भरा तप–त्याग युक्त आपका जीवन गुरुभक्ति और उदारता से परिपूर्ण था। हृदय की विशालता, सहनशीलता और सब्र–संतोष जैसे गुणों से सुशोभित राजमाता जी अत्यन्त सम्मानित और सर्वप्रिय थीं। निरंकारी राजमाता जी वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, रक्तदान और बच्चों को पल्स पोलियों ड्राप पिलाने आदि जैसे कार्यक्रमों में भी अग्रणी भूमिका निभाती रही हैं।

शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद आप निरंतर सत्संग कार्यक्रमों एवं प्रचार यात्राओं में सम्मिलित होकर श्रद्धालुओं को आशीर्वाद तथा प्रेरणा देती रहीं। इसी शारीरिक अस्वस्थता के चलते 29 अगस्त, 2014 को आप नश्वर शरीर को त्यागकर निरंकार प्रभु में लीन हो गईं। ऐसे आदर्श व्यक्तित्व से हमें हमेशा शिक्षा लेनी चाहिए और उनके द्वारा जिए गए जीवन को अपने आचरण और व्यवहार में लाना चाहिए।

आ रही है लाई-फाई

आपने वाई–फाई के बारे में सुना है और शायद उसका इस्तेमाल भी किया है। यह वायरलैस के जरिए इंटरनेट या दूसरी नेटवर्किंग सेवाओं का इस्तेमाल करने के लिए प्रयुक्त तकनीक है। अब तैयारी कीजिए लाई–फाई की, जिसका पूरा नाम है– लाइट फिडेलटी। असल में, इस तकनीक के जरिए बिजली की रोशनी के लिए इस्तेमाल होने वाले एलईडी बल्बों के जरिए इंटरनेट कनेक्टिविटी मुहैया कराना संभव है। कुछ महीने पहले चीन में इस तरह का सफल प्रयोग हुआ था। अब मैक्सिको के तकनीकविदों ने लाई–फाई के जरिए दस गीगाबाइट प्रति सेकेंड तक की रफ्तार से डेटा ट्रांसफर का कारनामा कर दिखाया है। लाई–फाई का इस्तेमाल ऐसे स्थानों पर भी किया जा सकता है, जहाँ वायरलेस के सिग्नल सही ढंग से न आते हों या सुरक्षित न समझे जाते हों।

खास बात यह है कि चूंकि लाई–फाई के सिग्नल प्रकाश के जरिए भेजे जाते हैं इसलिए उनकी रफ्तार कम नहीं होती और न ही उन्हें रास्ते में अनधिकृत रूप से इस्तेमाल किए जाने की आशंका ही रहती है।

आ गया बिना नेट का फेसबुक

फेसबुक ने उन मोबाइल धारकों के लिए एक ऐसा ऐप लांच किया है, जिनके पास मोबाइल तो है, पर इंटरनेट नहीं है। सोशल वेबसाइट कंपनी ने जाम्बिया में 'इंटरनेटडॉटआर्ग' नामक इस ऐप को लांच किया है। यह ऐप एयरटेल उपभोक्ताओं को फेसबुक और इसकी मैसेंजर समेत 13 अन्य इंटरनेट सेवाएं निःशुल्क मुहैया कराएगा। इनमें विकिपीडिया, गूगल सर्च, मौसम, नौकरी और स्वास्थ्य संबंधी सेवाएं होंगी। हालांकि ईमेल सुविधा नहीं होगी और गूगल सर्च के नतीजों से आगे जाने पर शुल्क लगेगा।

'इंटरनेटडॉटआर्ग' के प्रोडक्ट मैनेजमेंट डायरेक्टर गे रोजेने ने कहा है कि यह ऐप एंड्रायड के अलावा साधारण फीचर मोबाइल फोन पर भी काम करेगा। फेसबुक इस सेवा को अन्य देशों में भी लागू करेगा। रोजेने के अनुसार कहा, 'दुनिया की 85 फीसदी से ज्यादा आबादी मोबाइल कवरेज क्षेत्र में रहती है, लेकिन केवल 30 फीसदी आबादी ही इंटरनेट का इस्तेमाल करती है।' फेसबुक के सीईओ मार्क जुकरबर्ग ने कहा है, 'यह ऐप, दुनिया में हर व्यक्ति तक सस्ती इंटरनेट सेवाए मुहैया करने की हमारी कोशिशों का हिस्सा है।' उन्होंने कहा, 'इस लक्ष्य को पाने के लिए हम पिछले साल से दुनिया भर के मोबाइल ऑपरेटरों के साथ काम करते रहे हैं।

संग्रहकर्ताः बबलू कुमार

कविता : डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'

समय

समय बड़ी अनमोल चीज है।
जिसने इसको पहचाना,
वह ही अंकित है कर पाया
जीवन का ताना–बाना।

समय एक सा सबके हित में
ठहर–ठहर चलता रहता,
जी भर तुम उपयोग करो
है नित्य–नित्य कहता रहता।

सम्मान समय का सीख गया जो
मान स्वयं मिलता उसको,
वही श्रेष्ठ, जो कुछ कर पाया
नहीं, पूछता जग किसको?

उसी समय में एक श्रेष्ठ बन
युग को राह दिखा जाता,
किंतु उसी में एक मलिन कर
जग को, कर धुंधला जाता।

समय, बंधु सच, गंगाजल है
या समीर सौरभ वाली,
जिसने चखी, उसी ने जानी
महिमा बस गौरवशाली।

समय लहर, नदिया की चंचल
गई, हाथ से छूट गई,
किंतु सहेजा जिसने इसको
फल दे, बन मां, रही–सही।

गर तुमको इतिहास बनाना
बंधु! समय का मान करो,
अपने यश से भारत माँ का
जग में नव उत्थान करो।

जानकारी : प्रस्तुति– उमा सिंह चौहान

शांत स्वभाव–दीर्घजीवी कछुआ

'कछुआ' को शुभंकर कहा जाये तो शायद कोई अतिश्योक्ति न होगी। 'कछुआ' सामान्य तौर पर शांत स्वभाव वाला एवं दीर्घजीवी जल जन्तु है। 'कछुआ' जंगल के तालाब–जलाशयों में मिल जायेंगे तो वहीं गाँव–गिरांव की ताल–तलैया व पोखरों में खदर–बदर करते दिख जायेंगे। इतना ही नहीं, ड्राइंग रूम में रखे आलीशान एक्वेरियम में भी जलक्रीड़ा करते–तैरते छोटे–छोटे कछुए दिख जायेंगे। वैसे तो कछुए की करीब सवा दो सौ प्रजातियां होती हैं लेकिन हमारे यहाँ करीब पचपन प्रजातियां ही पायी जाती हैं।

कछुए का शरीर खास तौर से कड़े कवच से ढका रहता है जिससे उसके ऊपर हमले या चोट का कोई खास असर नहीं होता जबकि नीचे का हिस्सा सामान्य होता है, फिर भी काफी सख्त होता है, जिससे उसकी जान को कोई खतरा नहीं रहता।

कछुए के चार पैर होते हैं। प्रत्येक पैर में पांच–पांच नाखून होते हैं। पंजों में जालीनुमा संजाल होता है। कुछ कछुए अपना सिर व पैर शरीर के बाहर निकाल लेते हैं तो कुछ अपना सिर व पैर शरीर के बाहर ही रखते हैं। यह सब उनकी प्रजातियों पर निर्भर करता है।

सबसे भारी व वजनदार समुद्री कछुए होते हैं क्योंकि समुद्री कछुए की लम्बाई आठ फुट तक होती है तो उसका वजन 75 किलो तक होता है। मादा कछुआ अण्डों व बच्चों का खास ख्याल रखती है। मादा अण्डे देने के समय मिट्टी को खोद कर गड्ढा करती है। गड्ढे में अण्डे देने के बाद उसे मिट्टी से या बालू से ढक देती है जिससे अण्डे सुरक्षित रहें। मादा कछुआ एक बार में एक से तीस तक अण्डे देती है। यह अक्सर रात में अण्डे देती है। अण्डों से बच्चे 60 से 120 दिन में निकलते हैं। कछुआ को सामान्यतः नदियों का सफाईकर्मी माना जाता है क्योंकि इन्हें नदियों की गंदगी साफ करने में सहायक माना जाता है। कछुआ शाकाहारी व मांसाहारी दोनों ही होते हैं लेकिन दोनों की प्रजातियां अलग–अलग होती हैं।

लगान

कहानी : किशोर डैनियल

काफी समय पहले की बात है। राजपुताना क्षेत्र में मान सिंह नाम का एक जागीरदार था। उसका एक पुत्र था जिसका नाम शेरसिंह था। शेरसिंह बड़ा होनहार और दयालु स्वभाव का था।

एक बार राजपुताना में बरसात नहीं हुई। अकाल पड़ गया। किसान जागीरदार को लगान नहीं दे सके। जागीरदार के कर्मचारियों ने जबरदस्ती किसानों के घरों में जो कुछ भी था वह उठा लाये और किसानों को पकड़कर जागीरदार के सामने पेश किया। शेरसिंह ने देखा कि उन गरीब और लाचार किसानों को सताया जा रहा है। उन्हें देखकर उसे दया आई। उसने उनकी मदद करने की सोची।

शेरसिंह उन दिनों घुड़सवारी सीख रहा था। जागीरदार ने कहा था कि तुम घुड़सवारी अच्छी तरह सीख लोगो तब तुम्हें मुंह–मांगा ईनाम दिया जायेगा।

शेरसिंह ने अभ्यास करके घुड़सवारी में निपुणता हासिल कर ली। एक दिन उसने जागीरदार के सामने अपनी घुड़सवारी का प्रदर्शन किया। जागीरदार ने खुश होते हुए कहा– बेटा, मैं बहुत खुश हूँ; बोलो

क्या ईनाम चाहते हो?

शेरसिंह ने कहा– पिताजी! इस वर्ष वर्षा न होने से किसानों के पास खाने को कुछ नहीं है तो लगान कहाँ से दे? इन किसानों का लगान माफ कर दीजिए और इनसे इनकी जबरदस्ती लाई हुई सारी चीजें वापस कर दीजिये और हो सके तो इन गरीब किसानों को मदद भी कीजिये।

शेरसिंह की बात सुनकर राजा को बड़ी प्रसन्नता हुई। ये सब तो मैं अभी कर देता हूँ परन्तु बेटा, तुमने अपने लिए तो कुछ नहीं मांगा, कुछ तो मांग।

इस पर शेरसिंह बोला– पिताजी! आप प्रसन्न हैं तो यह नियम बना दें कि जिस वर्ष फसल अच्छी न हो उस वर्ष लगान न लिया जाए।

जागीरदार ने ऐसा ही किया, किसानों की जब्त की हुई चीजें लौटा दीं और भविष्य में फसल न होने पर लगान न लेने का नियम बना दिया।

–शेर सिंह जैसे दयालु स्वभाव के लोग दिलों पर राज्य करते हैं जबकि शक्ति वाले लोग डरा–धमका कर क्रूर व्यवहार से लोगों को केवल डरा ही सकते हैं।

क्या आप जानते हैं?

- ★ शुतुरमुर्ग कंकड़–पत्थर भी खा सकता है।
- ★ आग बरसाने वाला पेड़ मलेशिया में है।
- ★ दुनिया में सबसे तेज बढ़ने वाला पौधा बांस है।
- ★ सात पहाड़ियों का नगर रोम को कहते हैं।
- ★ भारत में सबसे बड़ा होटल दक्षिण मुम्बई में ओबराय है जो कि समुद्र के किनारे बना है।
- ★ सूर्य का प्रकाश जल के भीतर अधिकतम 400 मीटर की गहराई तक जा सकता है।
- ★ भारत पाकिस्तान की सीमा को निर्धारित करने वाली लाईन को 'रेड क्लीफ लाईन' कहा जाता है।

संकलनकर्ता : फहमीदा पठान (फतेहपुर शेखावटी)

कहानी : सोनी निरंकारी

सच्चा सेवक

एक राजा था। उसकी उम्र बहुत हो चुकी थी। उसके तीन पुत्र थे। उसने सोचा कि अब राजगद्दी योग्य पुत्र के हाथ में सौंप दूँ। यह सोचकर राजा ने तीनों पुत्रों को बुलाया और कहा– जो भी मेरी परीक्षा में पूर्ण उतरेगा, उस को ही राजगद्दी का अधिकारी बनाऊँगा। राजा ने उन्हें पांच वर्ष का समय दिया। तीनों पुत्र राजमहल छोड़कर चले गये।

पहले ने सोचा कि मैं बहुत सारा धन कमाऊँगा, धन को देखकर पिताजी महाराज बहुत खुश होंगे।

दूसरे ने सोचा कि संसार में सारे अधिकार शक्तिशाली को मिलते हैं तो क्यों न मैं एक शक्तिशाली सेना तैयार करूँ। उसने एक सेना तैयार करनी शुरू कर दी।

तीसरे ने सोचा कि धन तो हाथ की मैल है और शक्ति से भी बड़ी बुद्धि तथा सदाचार है। अतः वह दूसरे राज्य में जाकर बस गया। बड़ी मेहनत करके वह जो भी कमाता, उसमें से आधा धन दीन–दुःखियों की सेवा में लगाता। वह सब की सहायता के लिए हर समय तत्पर रहता। उसके परिश्रमी स्वभाव, दयालु तथा परोपकारी तथा सेवाभाव को पूरा राज्य जान गया था। राजा के कानों में भी इस बात की खबर पहुँच गई

थी। राजा ने अपने गुप्तचर भेज कर पता भी लगाया कि वह परोपकारी दयालु पुरुष कौन है?

पाँचवा वर्ष बीतने वाला था। दूसरे पुत्र ने अपने बड़े भाई के ऊपर आक्रमण करके सेना के बल पर सारी कमाई छीन ली और सेना लेकर पिता के पास पहुँचा। इसी बीच फटेहाल निर्धन व्यक्ति की अवस्था में तीसरा पुत्र भी आ पहुँचा। फिर तीनों पुत्रों के कार्य, स्वभाव और व्यवहार की तुलना कर रहा था कि पड़ोस के राजा के आने का समाचार मिला।

पड़ोसी राजा का स्वागत–सत्कार कर उसे राजमहल में ठहराया गया और उसके आने का कारण जानना चाहा तो पड़ोसी राजा बोला– आपसे निवेदन करने आया हूँ कि अपने छोटे बेटे का विवाह मेरी पुत्री से करने की कृपा कीजिए।

राजा ने कहा– वह तो निर्धन और फटेहाल लौटा है। वह आपकी राजकुमारी के योग्य कहाँ?

पड़ोसी राजा ने उत्तर दिया– वह मेरे ही राज्य में पिछले पांच वर्ष से रह रहा था। मेरे राज्य में उसका बहुत आदर–सत्कार है। मुझे तो ऐसे ही दामाद की आवश्यकता है। विवाह के बाद अपना राजकार्य संभालने की भी प्रार्थना उसी से करने वाला हूँ।

राजा ने कहा– आप कुछ दिन मेरे ही अतिथि बनकर रहने की कृपा करें। मैं उसी को अपनी राजगद्दी भी सौंप रहा हूँ क्योंकि मेरी कसौटी

पर भी वही खरा उतरा है।

दूसरे दिन भरे दरबार में राजा ने घोषणा की कि जो सम्बन्ध शक्ति और अधिकारों का दुरुपयोग करके धन बटोरता है। जनता का शोषण करता है। वह जनता की रक्षा नहीं कर सकता। वह प्रजा को कभी भी सुखी नहीं रख सकता है।

इसी प्रकार जो शक्ति के बल पर अत्याचार करता है और दूसरों का धन लूटता है, वह भला प्रजा के सुख के लिए क्या करेगा? हाँ, जिसे हर स्थिति में दीन–दुःखियों की सेवा अपने कष्टों में भी प्रिय हो। वही महान है क्योंकि संसार में सेवा ही महान धर्म है।

राजा ने अपने छोटे बेटे को अपना राज्य सौंप दिया। पड़ोसी राजा ने भी उससे अपनी बेटी का विवाह सम्पन्न करवा दिया।

छोटी गर्दन वाला : सफेद गैंडा

बड़े सिर और भारी शरीर वाला सफेद गैंडा, गैंडों की पांच बड़ी प्रजातियों में से एक है और यह कुछ हाथियों की तरह दुनिया के बड़े स्तनपायियों में से एक माना जाता है। लेकिन भारी शरीर के साथ इसकी गर्दन छोटी और छाती चौड़ी होती है।

नर सफेद गैंडे का वजन लगभग 2300 किलोग्राम होता है। अब तक के सबसे बड़े गैंडे का वजन 4500 किलोग्राम तक रिकॉर्ड किया गया है। इस जानवर में एक खास बात यह है कि इसकी नाक पर दो सींग होते हैं, जो कैरोटिन के बने होते हैं। इस गैंडे में एक खास चीज और होती है, वह है इसकी पीठ पर उठा हुआ कूबड़।

घास को अच्छी तरह से खाने के लिए इसके पास चौड़ा मुंह होता है। वैसे तो इसके कान सब कुछ सुन लेते हैं, लेकिन यह ज्यादातर समय सूंघकर ही अपना काम चलाता है। इसकी नाक धरती पर पाए जाने वाले सभी जानवरों में सबसे चौड़ी होती है। यह 40 से 50 साल तक जीवित रह सकता है।

जानकारी : प्रज्ञा पांडेय

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर 'त' अक्षर पर खत्म होते हैं। पैन या पैंसिल उठाइए और प्रश्नचिन्ह के बाद उत्तर लिखते जाइए।

प्रश्न 1 : एक करोड़ में कितने शून्य होते है? ... त

प्रश्न 2 : महर्षि वेदव्यास ने किस महाकाव्य की रचना की? ... त

प्रश्न 3 : किस देश की राजधानी का नाम कुवैतसिटी है? ... त

प्रश्न 4 : श्रीमद्भगवद्गीता किस भाषा में लिखी गई थी? ... त

प्रश्न 5 : संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्रीय देश कौन–सा है?. ... त

प्रश्न 6 : भारत का नेपोलियन किस शासक को कहा जाता है? ... त

प्रश्न 7 : मूल रूप से किस क्षेत्र के निवासी को तिब्बती कहते हैं? ... त

प्रश्न 8 : नेपाल की संसद का क्या नाम है? ... त

प्रश्न 9 : भारत की पहली महिला राजदूत कौन थी? ... त

प्रश्न 10 : अभिमन्यु के पुत्र का क्या नाम था? ... त

प्रश्न 11 : किस महीने की 29 तारीख को 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के रूप में मनाया जाता है? ... त

प्रश्न 12 : लेबनान देश की राजधानी का क्या नाम है? ... त

प्रश्न 13 : शकुंतला और दुष्यंत के किस पुत्र के नाम पर भारत देश का नाम पड़ा? ... त

प्रश्न 14 : हरियाणा के किस शहर में सन् 1526, 1556 और 1761 में तीन युद्ध लड़े गए? ... त

प्रश्न 15 : किस भारतीय राज्य की राजधानी गाँधीनगर है? ... त

(सही उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

कहानी : डॉ. दर्शन सिंह आशट

गुलाब की महक

आज बाल दिवस था।

स्कूल में खूब चहल–पहल थी। पंडाल रंग–बिरंगी झंडियों से सजा हुआ था। मनदीप, अमितोज, गुन्नू, प्रीत और राहुल एक दूसरे से मिलकर स्कूल के कार्यक्रम की सफलता हेतु कार्य कर रहे थे। कार्यक्रम का आरम्भ एक भजन से होना था। भजन गायन पिंकी और उसकी सहेलियों द्वारा किया जाना था। फिर गुन्नू ने देशभक्ति का गीत सुनाना था और पम्मी और जग्गी ने नकलचियों का स्वांग धारण करके श्रोताओं को हँसी से लोट–पोट करना था।

अचानक ही सुबह–सुबह चंदन के मोबाइल फोन की रिंग बजी।

चंदन ने आवाज सुनी। मनदीप बोल रहा था, ''चंदन, तुम आज स्कूल जल्दी पहुँच जाना। रमेश सर कह रहे थे कि हम दसवीं कक्षा के छात्रों ने पहले पहुँचकर स्कूल में पानी का छिड़काव करना है। सफेदी से निशान लगाने हैं, फूलों वाले गमलों को तरतीब में रखना है और... ।''

अभी मनदीप ने अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि चंदन बोल पड़ा, ''रहने दो, रहने दो। मैं कोई स्कूल का सेवादार नहीं हूँ जो स्कूल की

साफ–सफाई और सजावट का काम करूं। तुम ही जाओ, ये सब काम करने के लिए। मैं नहीं जाऊंगा।''

मनदीप को चंदन से ऐसा जवाब मिलने की उम्मीद नहीं थी। वह सोचने लगा कि उसे क्या हो गया? अभी कुछ दिन पहले तो उसने खुद कहा था कि इस बार हम स्कूल में बाल दिवस धूमधाम से मनायेंगे। ये करेंगे, वो करेंगे लेकिन यह क्या हो गया उसे? वह इतना गुस्से में क्यों हैं? वह इस बात को क्यों भूल गया है कि स्कूल सब का सांझा है और इसे साफ–सुथरा और सुंदर बनाकर रखना हम सब का कर्तव्य है।

मनदीप ने चंदन को दोबारा फोन किया और प्यार से उसकी नाराजगी का कारण पूछा तो वह फूट पड़ा, ''तुम जानते हो न कि जिस दिन रमा मैडम ने 'चाचा नेहरु जिंदाबाद' नाटक खेलने की योजना बनाई थी, तुम्हे मालुम है?''

मनदीप ने पूछा, ''अरे यार, इधर–उधर की बातें करके मुझें क्यों उलझा रहे हो? साफ–साफ बताओ, तुम्हारी नाराजगी का क्या कारण है?''

चंदन बोला, ''बात यह है कि उस दिन बाल सभा में यह फैसला हुआ था कि बाल दिवस के मौके पर 'चाचा नेहरू जिंदाबाद' में मैं चाचा नेहरू की भूमिका निभाऊंगा। लेकिन मुझे पता चला है कि परसों मेरी जगह पर सातवीं कक्षा के प्रिंस को चाचा नेहरू का रोल दिया जा रहा है। उसने रिहर्सल भी करनी शुरू कर दी है। इसलिए मैं कल गुस्से का मारा स्कूल नहीं गया और सोचा कि आज भी न जाऊं।''

मनदीप ने उसे प्यार भरी डांट पिलाई, ''धत् तेरी की। तुम इतनी छोटी सोच के मालिक बन रहे हो? इतनी छोटी–सी बात को लेकर नाराज होकर बाल दिवस का मजा किरकिरा कर रहे हो? तुम मुझे देख, रंजन सर ने मुझे संचालक का कर्त्तव्य निभाने को कहा है। मैं चाहता हूँ कि यदि यह कर्त्तव्य तुम निभाना चाहो तो मुझे खुशी होगी। मैं नहीं चाहता कि संचालक बनने की शान में खामख्वाह अकड़ता फिरता रहूँ। बस मेरी आप से यही 'रिक्वेस्ट' है कि अपने स्कूल की शान का सवाल है। मुख्य अतिथि साहब आ रहे हैं और डिप्टी कमिश्नर साहब

भी। हमें चाहिए कि स्कूल की सजावट और कार्यक्रम की सफलता में कोई कमी न रहने दें। ऐसा करने से एक दूसरे को नौकर या 'पीयन' इत्यादि कहना ठीक बात नहीं।''

चंदन उसकी बातें सुनता रहा। फिर उसने फोन काट दिया।

मनदीप ने अंदाजा लगा लिया कि अब उसे फोन करना उचित नहीं है। उसने सोचा कि चंदन के आज स्कूल में जल्दी आकर सजावट के काम में हाथ बंटाने की बात तो दूर की रही, वह शायद स्कूल ही न आये।

मंच पर रखे मेज पर फूलदान टिका रहे और उधेड़बुन में पड़े मनदीप को पता ही न चला कि प्रिंसीपल साहब कब उसके पीछे आ खड़े हुए हैं।

''शाबाश बेटा, तुम सब दोस्त पूरी जिम्मेदारी से काम कर रहे हो लेकिन तुम्हारा दूसरा साथी नजर नहीं आ रहा। क्या नाम है उसका? हाँ याद आया चंदन?''

''सर वो वो...।'' अभी मनदीप की बात अधूरी ही थी कि प्रिंसीपल साहब यह कहते हुए आगे बढ़ गये, ''चलो आ जाएगा।''

लेकिन मनदीप प्रिंसीपल साहब को क्या कहता?

''क्या बात है चंदन बेटा, आज स्कूल जाने के लिए तैयार नहीं हुए? आज 14 नवम्बर है और तुम कह रहे थे कि इस बार भी तुम्हारे स्कूल में

धूमधाम से बाल दिवस मनाया जा रहा है। लेकिन ...।''

लेकिन चंदन ने मम्मी की बात का कोई जवाब नहीं दिया। मम्मी ने उसे दोबारा पूछा तो उसने सब कुछ साफ–साफ बता दिया। उसकी बात सुनकर मम्मी बोलीं, ''अरे लल्लू, इतनी सी बात से गुस्सा हो गये तुम? बल्कि तुम्हें तो खुश होना चाहिए कि तुम से भी छोटा बच्चा नाटक में चाचा नेहरू का रोल निभायेगा।''

मम्मी ने चंदन के कंधे पर हाथ रखा और फिर बोलीं, ''मुझे मालूम है मेरा बेटा नाटक में बहुत अच्छी भूमिका निभाता है और जिस भी नाटक में काम करता है, पंडाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंजने लगता है। पर बेटा मैं खुद भी चाहूंगी कि वो सातवीं कक्षा का बच्चा जिसका तुम नाम ले रहे हो, इस बार नायक की भूमिका निभाये। ऐसा करने में उसके अंदर छिपी हुई प्रतिभा को भी बाहर आने का अवसर मिलेगा और खुशी भी। मैं तो यह चाहती हूँ कि तुम उसका निर्देशन करो।''

मम्मी की बातें सुनकर चंदन की जैसे आंख खुल गई हों। सोचने लगा, ''मुझे मम्मी की बात माननी चाहिए। मुझे तो मौके मिलते ही रहते हैं। सचमुच ही उस बच्चे को कितनी खुशी मिलेगी जो पहली बार नाटक में रोल निभायेगा।''

चंदन फटाफट नहा–धोकर तैयार हो गया और कुछ ही मिनटों में स्कूल में चला गया। उसने देखा, पंडाल की सजावट देखते ही बनती थी। उसे पता चल चुका था कि यूनिवर्सिटी के उप–कुलपति साहब मुख्य अतिथि के तौर पर कार्यक्रम में पधार रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिले के डिप्टी कमिश्नर साहब ने करनी थी।

स्कूल में शहनाई की धुन गूंजने लगी। नन्हें–मुन्ने बच्चे अपने माता–पिता के साथ स्कूल में आने लगे।

सजावट का सारा काम निपटा के मनदीप अपने दूसरे साथियों के साथ हॉल में पहुँचा जहाँ कलाकार तैयार हो रहे थे। वहाँ का दृश्य देखकर वह दंग रह गया। चंदन खुद प्रिंस को चाचा नेहरू की ड्रैस में सजा रहा था।

''बहुत अच्छे! मुझे मेरे दोस्त से यही उम्मीद थी।'' मनदीप ने चंदन को बगल में लेते हुए कहा।

''सॉरी मनदीप, मैंने गुस्से में आकर गलत निर्णय ले लिया था कि स्कूल नहीं जाऊंगा लेकिन मम्मी ने मुझे अपनी गलती का एहसास करवा दिया। आज मैं नहीं, बल्कि हमारे स्कूल का नन्हा–मुन्ना कलाकार प्रिंस ही नाटक में चाचा नेहरू की भूमिका निभायेगा।''

कार्यक्रम आरम्भ हुआ। नाटक में चाचा नेहरू की भूमिका में प्रिंस सुंदर लग रहा था। उसके कोट पर गुलाब का फूल अपनी छटा बिखेर रहा था।

नाटक समाप्त हुआ तो तालियां गूंज उठीं। मुख्य अतिथि ने स्कूल में बाल दिवस के अवसर पर अलग–अलग गतिविधियों में भाग लेने वाले बच्चों को इनाम बांटे।

हाथ में अपना इनाम पकड़े प्रिंस ने पंडाल में बैठे चंदन को सैल्यूट किया, चंदन ने उसके सैल्यूट का जवाब दिया।

चंदन और प्रिंस की मुस्कान देखकर गुलाब के फूल की महक दोगुनी हो गई।

भैया से पूछो

– महन्थ राजपाल (उटरु कला, जौनपुर)

प्रश्न : 'जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि' का क्या मतलब होता है?

उत्तर : यहाँ दृष्टि का अर्थ सोच की दिशा से है, उसके वातावरण से है। जिस प्रकार जिस रंग का चश्मा पहना होता है, व्यक्ति उसी रंग में हर वस्तु को देख लेता है। इसी प्रकार अपनी विचारधारा व वातावरण के अनुसार ही वह हर वस्तु व घटना को देखने लगता है। जैसे प्रभु–भक्त को हर स्थान, हर प्राणी में प्रभु ही दिखाई देते हैं; इसलिए वह किसी की ईर्ष्या, निन्दा–चुगली आदि नहीं करता; इसके विपरीत मायावी आदमी उससे उलट व्यवहार करता है।

– सोनू कुकरेजा (वडसा)

प्रश्न : यदि कोई व्यक्ति हमसे ईर्ष्या करे और ईर्ष्यावश वह हमें नुकसान पहुँचाए तो उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाए?

उत्तर : सर्वशक्तिमान निराकार–परमात्मा का सुमिरण करके सजग रहकर यथायोग्य व्यवहार करें।

– श्याम कुमार बिल्दानी (बड़नेरा)

प्रश्न : अपनो से बड़े बुजुर्ग लोगों का जो मान–सम्मान नहीं करते; उनका अपमान करते हैं और अपनी मनमानी करते हैं, ऐसे व्यक्तियों को आप क्या कहेंगे?

उत्तर : उदण्ड व कुमार्गी।

– कमल नागपाल (खण्डवा)

प्रश्न : क्या सन्तोष पाने मात्र से ही व्यक्ति सुखी हो जाता है?

उत्तर : सन्तोष तो सुख और दुःख से पार की स्थिति है।

– प्राची नागपाल (अबोहर)

प्रश्न : कैसा जीवन जीने से अहंकार नहीं आता।

उत्तर : भक्ति भरा जीवन जीने से।

– नीलम डेंगानी (वडसा)

प्रश्न : भरोसा किस पर और कब करना चाहिए?

उत्तर : सजग व्यक्ति अपनी व दूसरे की सामर्थ्य का आंकलन करके ही भरोसा करता है।

– जगदीश खनेजा (कलानौर)

प्रश्न : जिस पर हमें विश्वास होता है। अगर वही हमारा विश्वास तोड़ दे तो हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर : अपनी सोच का पुनः आंकलन करना चाहिए ताकि विश्वास करने से पहले खुले दिमाग से आंकलन हो सके।

– रमेश खनेजा (कलानौर)

प्रश्न : हमारा ध्यान पढ़ाई में ज्यादा लगे इसके लिए हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर : पढ़ाई के महत्व को समझें कि प्रगति के लिए यह सर्वोत्तम साधन है। फिर थोड़ा बोल–बोल कर पढ़े हुए पाठ को पुनः लिखें। याद रखें; किसी भी विचार को 3–4 बार लिख लें तो वह पक्का याद हो जाता है। याद होना प्रारम्भ हो जाये तो मन और दृढ़ता से पढ़ाई में लग जाता है।

प्रश्न : किसी–किसी घर में सब ज्ञानवान और शिक्षित होते हुए भी आपसी तालमेल एक जैसा क्यों नहीं होता?

उत्तर : ज्ञान को व्यवहार में न ला पाने के कारण ऐसा होता है।

प्रश्न : इन्सान संयम कब खो बैठता है?

उत्तर : अपनी सामर्थ्य की सीमा के पार होते ही इन्सान ऐसा कर बैठता है। इसलिए तो कहा जाता है–अपनी सामर्थ्य की सीमा बढ़ाएं ताकि संयमी बन सकें।

– अनिल कुमार (बउड़िया)

प्रश्न : 'विद्या ददाति विनयम्' कहाँ तक सत्य है?

उत्तर : सौ प्रतिशत। हाँ अधूरी विद्या अहंकार को जन्म देती है। अहंकार विनयशीलता के विपरीत भाव है।

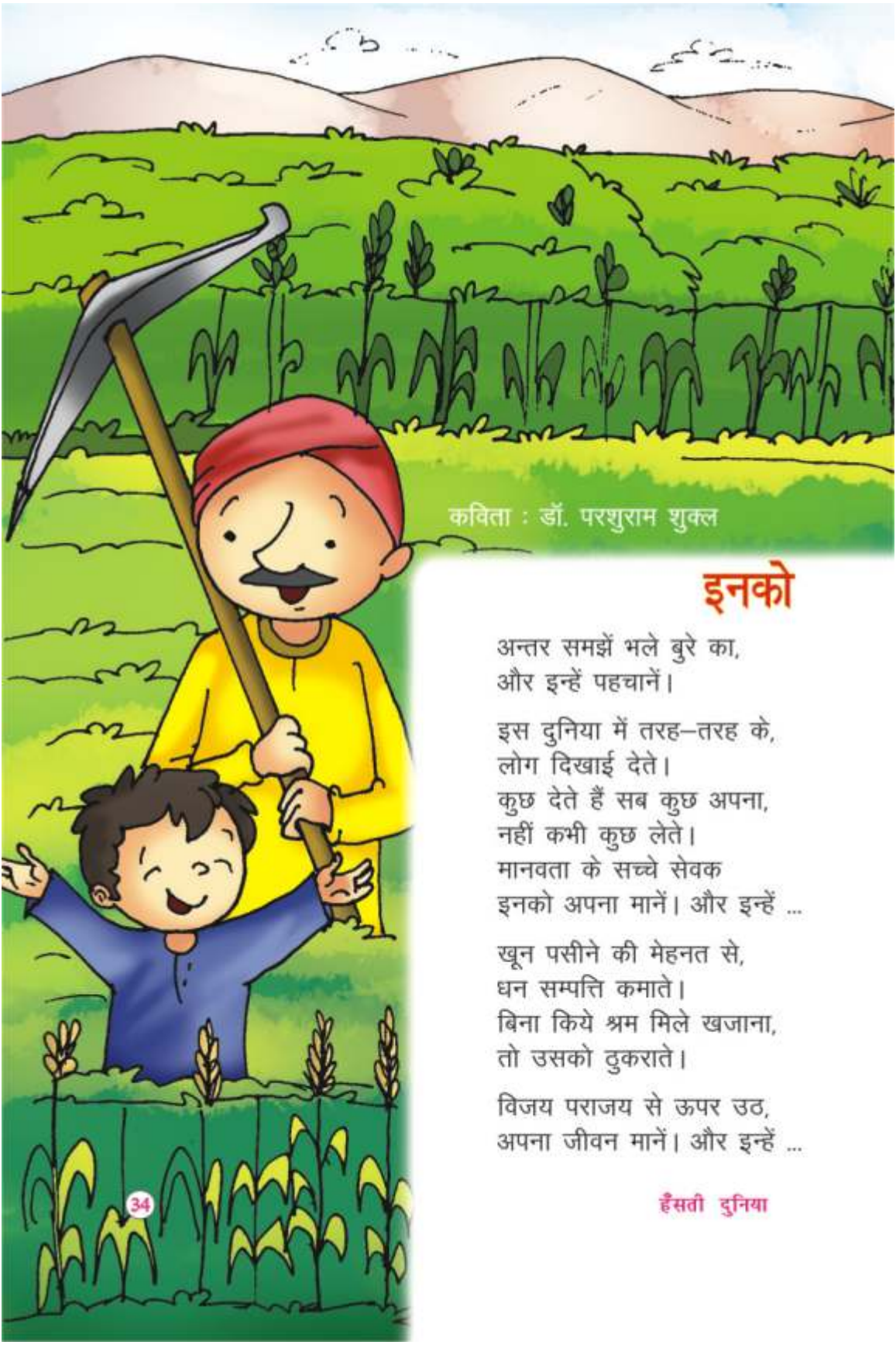

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

इनको

अन्तर समझें भले बुरे का,
और इन्हें पहचानें।

इस दुनिया में तरह–तरह के,
लोग दिखाई देते।
कुछ देते हैं सब कुछ अपना,
नहीं कभी कुछ लेते।
मानवता के सच्चे सेवक
इनको अपना मानें। और इन्हें ...

खून पसीने की मेहनत से,
धन सम्पत्ति कमाते।
बिना किये श्रम मिले खजाना,
तो उसको ठुकराते।

विजय पराजय से ऊपर उठ,
अपना जीवन मानें। और इन्हें ...

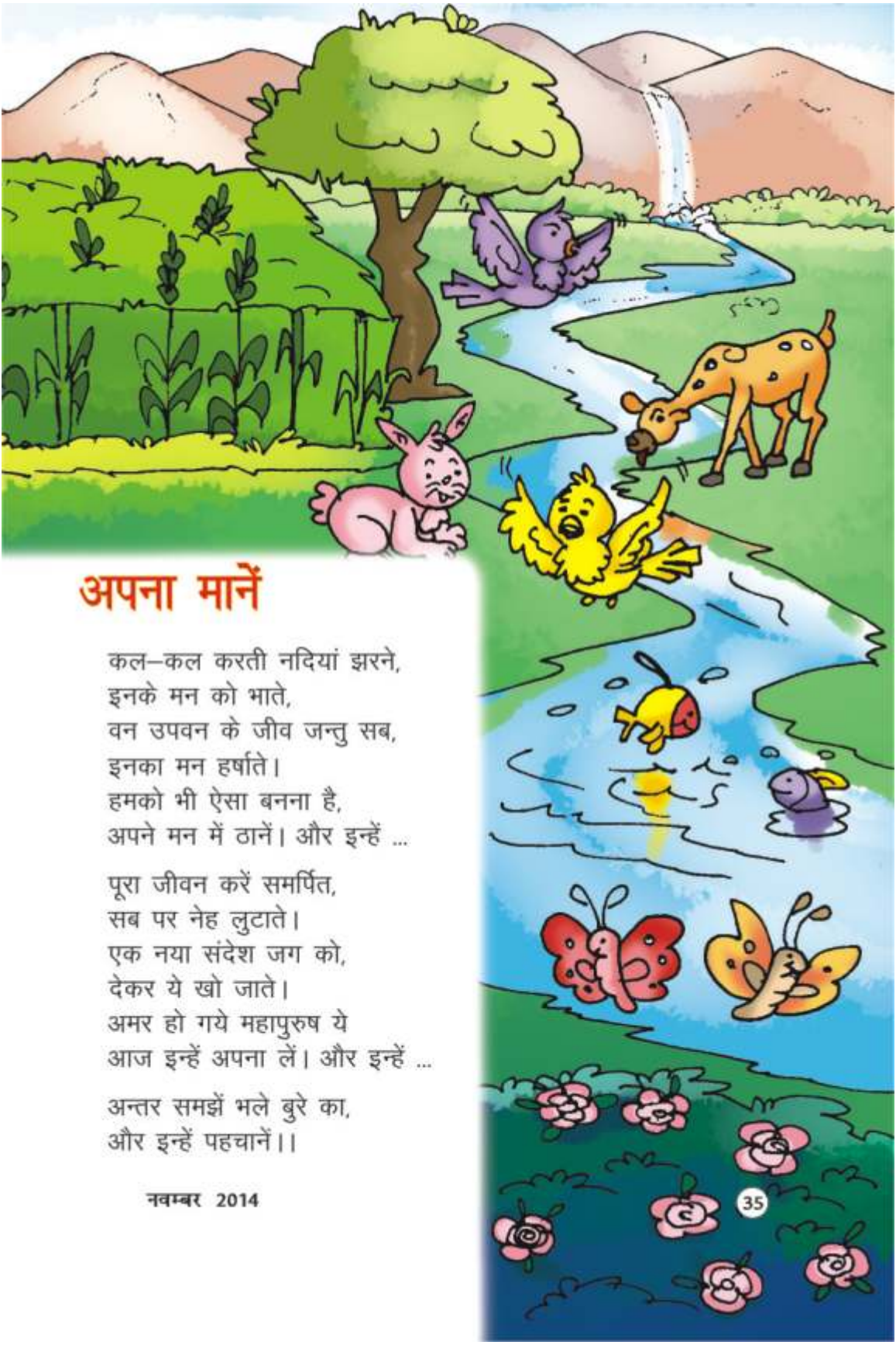

अपना मानें

कल–कल करती नदियां झरने,
इनके मन को भाते,
वन उपवन के जीव जन्तु सब,
इनका मन हर्षाते।
हमको भी ऐसा बनना है,
अपने मन में ठानें। और इन्हें ...

पूरा जीवन करें समर्पित,
सब पर नेह लुटाते।
एक नया संदेश जग को,
देकर ये खो जाते।
अमर हो गये महापुरुष ये
आज इन्हें अपना लें। और इन्हें ...

अन्तर समझें भले बुरे का,
और इन्हें पहचानें।।

तोते भी नाम से पुकारते हैं परिचितों को

अभी तक हम यह जानते हैं कि सिर्फ इंसान ही एक–दूसरे का नाम रखते हैं लेकिन लंदन (इंग्लैण्ड) में किये गये एक नये शोध से पता चला है कि तोते भी एक–दूसरे को नाम से पुकारते हैं और उनका हाल–चाल पूछते हैं। तोतों की यह खूबी उन्हें विरासत में मिलती है और उनके माता–पिता उन्हें दूसरे तोतों का नाम पुकारना सीखाते हैं। तोते के बच्चे जब घोंसले में ही रहते हैं तो उन्हें अपने भाई–बहनों और माता–पिता के नाम की जानकारी हो जाती है। बाद में उन्हे आस–पास रहने वाले तोतों की जानकारी हो जाती है।

शोधकर्ता कार्ल बर्ग ने वेनेजुएला में हरे तोतों के तरीके और उनके बर्ताव का अध्ययन करके यह पता लगाया है कि जंगली तोते जब किसी अनजान तोते से मिलते हैं तो उनसे उनका हालचाल पूछने के साथ उन्हें अपना नाम भी बताते हैं। कार्ल के साथ काम कर रहे शोधकर्ताओं ने इस अध्ययन के लिए 2011 में 106 मानव निर्मित घोंसले बनाए और इन सभी घोंसलों की ऑडियो और वीडियो रिकॉर्डिंग की जाती थी। इसके बाद उन्होंने तोतों के अंडे देने पर 12 अंडे एक–दूसरे के घोंसलों में रख दिए। दूसरे तोतों के घोंसलें में रखे गए अंडे से निकले बच्चों और अपने माता–पिता के घोंसले में पलने वाले तोतों के बच्चों की आवाज रिकार्ड की जाती रही।

रिकॉर्ड का अध्ययन करने पर पता चला कि भले ही कुछ तोते अपने माता–पिता के पास नहीं पले बढ़े लेकिन उन्हें दूसरे तोतों ने बिल्कुल वैसी ही शिक्षा दी जैसे कि असली माता–पिता दे रहे थे। कार्ल के मुताबिक इन पक्षियों की आवाज सुनकर भले ही लगता है कि वे निरर्थक शोर कर रहे हैं लेकिन वास्तव में कुछ भी निरर्थक नहीं बोलते बल्कि उनकी संवाद प्रणाली बहुत अच्छी होती है। (वार्ता)

बाल कथा : महेन्द्र सिंह शेखावत

छोटी सी बात

–मोहन बेटा, भोजन कर लो! कब से लगाया हुआ रखा है।– मम्मी ने दो–तीन बार मोहन से कहा लेकिन मोहन का तो एक ही जवाब मिलता– मम्मी, अभी आ रहा हूँ।

यह बात आज की ही नहीं थी, कई बार मोहन की मम्मी भोजन लगा देती थी लेकिन मोहन तो अपने साथियों के साथ खेलने में व्यस्त रहता था। उसे भोजन की थोड़ी–सी भी चिंता न रहती।

भोजन के प्रति मोहन की इस प्रकार की लापरवाही से मोहन की मम्मी तंग आ चुकी थी। वह यह भी जानती थी कि भोजन को काफी देर तक खुला पड़ा रखने से उस पर गर्द और कीटाणु जम जाते हैं जो

स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध होते हैं। यह बात मोहन को कई बार समझा चुकी थी लेकिन मोहन तो ऐसी छोटी–छोटी बातों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देता था और कहता था– मम्मी, ऐसे थोड़ी–सी देर में क्या होता है?

आज सायंकाल को मोहन की मम्मी ने मोहन को अपने पास बुलाया और उसके हाथों में थाली थमाते हुए कहा– बेटा, इस थाली को पानी से अच्छी तरह से साफ करके रसोई में रख आओ।

मोहन ने थाली लेकर उसे पानी से अच्छी तरह से साफ करके रसोई घर में रख दी।

दूसरे दिन सुबह उठते ही मम्मी ने मोहन से कहा– बेटा, रात को जो थाली रसोईघर में रखी थी, उसे लेकर आओ।

मोहन ने दूसरे ही पल वह थाली लाकर मम्मी के हाथों में थमा दी। तब मोहन की मम्मी ने मोहन से पूछा– बेटा, इस थाली को अच्छी तरह से देख कर बताओ, यह साफ है क्या?

मोहन ने थाली को देखा तो उसे आश्चर्य हुआ। रात में जिस थाली को उसने बिल्कुल साफ करके रखा था, अब उसमें काफी गर्द जमी हुई थी। वह बोला– मम्मी, यह तो गंदी है, इस में गर्द जम गई है।

तब मोहन की मम्मी ने उसे समझाते हुए कहा– बेटा, इस थाली में इतनी गर्द इसलिए जम गई है क्योंकि यह थाली रात भर खुली रखी हुई थी। इस प्रकार जब तुम्हारा भोजन भी काफी देर तक खुला रखा रहता है तो उसमें भी इसी प्रकार से गर्द जमा हो जाती है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध होती है। इसलिए जब–जब भी तुम्हें भोजन

लगाने के बाद आवाज दी जाये तो सबसे पहले तुम खेल को छोड़ कर पहले भोजन कर लिया करो ताकि उसमें गर्द तथा कीटाणु जमा न हो सके क्योंकि भोजन जितनी देर तक खुला रखा रहेगा उसमें उतनी ही ज्यादा गर्द और कीटाणु जमा होते रहेंगे जो हमें बीमार कर सकते हैं।.... और भोजन की उपेक्षा करने से उसका अपमान भी तो होता है।

यह सुनकर मोहन को अपनी गलती का आभास हो गया। वह क्षमा माँगते हुए बोला– मम्मी, आज के बाद मैं यह गलती कभी नहीं करूंगा। यह छोटी–सी बात अब मेरी समझ में अच्छी तरह से आ गई है। आज तक मैं इसे छोटी–सी बात ही समझता था। भोजन पड़ा रहने से उसका अपमान भी होता है। अब मैं अपने हाथों को भी अच्छी तरह से साफ करके खाना खाऊंगा।

इसके बाद मोहन ने कभी ऐसी गलती नहीं की। उसकी माँ जब भी उसे भोजन लगा कर आवाज देती तो वह सबसे पहले खेल–कूद को छोड़कर अपने हाथ साफ करता और तुरंत भोजन करने लगता।

यह देखकर अब मोहन की मम्मी बहुत खुश थी।

कोमोडो ड्रैगन

यह गोह जाति का एक सरीसृप है। आग की लपटों जैसी इसकी लपलपाती जीभ के कारण उसके मुँह से आग फेंकने की कहानी चल पड़ी होगी। इसकी सबसे बड़ी खासियत है इसका पेटूपन। एक 45 किलो का कोमोडो 40 किलो की बकरी या सूअर पर आसानी से हाथ साफ कर सकता है। सर्वप्रथम डच वायु सेना के एक पायलट को जहाज में आयी खराबी की वजह से एक निर्जन द्वीप कोमोडो पर उतरना पड़ा। यही उसकी पहली बार ड्रैगन से मुलाकात हुई। इण्डोनेशिया में तो कई दुर्लभ टापुओं में मुँह से आग फेंकन वाले खूंखार ड्रैगन का निवास ही माना गया है।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

जानकारी : दीपांशु जैन

दिलचस्प दुनिया जानवरों के दांतों की

प्रकृति ने अलग–अलग जन्तुओं को वातावरण के अनुसार अलग–अलग दांत दिये हैं। 'हाथी के दाँत खाने के और, दिखाने के और' प्रसिद्ध कहावत है। अतः दाँतों का उपयोग खाने के अलावा अन्य कार्यों में भी किया जाता है।

मनुष्य, दांतों का उपयोग भोजन चबाने में करते हैं। जंगली जानवर शिकार करने को चीरने–फाड़ने में दांतों से काम लेते हैं। सर्प शिशु अपने इस अनोखे दांत द्वारा ही अंडे को चीरकर बाहर आता है, जो इसके बाद शीघ्र ही झड़ जाता है। इसी प्रकार बिल्ली आश्चर्यजनक कोमलता से अपने बच्चों को दांत द्वारा ही पकड़ कर इधर से उधर ले जाती है। वालरस नामक प्राणी तो चलता ही दांतों की सहायता से है। मेंढक के मुंह में केवल ऊपर के जबड़े में एक पंक्ति दांतों की होती है जो मुंह में आए हुए शिकार को बाहर निकलने से रोकते हैं। इसी के जाति के भाई टोड तो बिना दांत के होते हैं। आरा मछली का लम्बा नुकीला मुंह ही आरी जैसे दांतों से युक्त होता है।

नेरीस नामक समुद्री जन्तु के तो मुंह में पेट में दांत होते हैं। एक ओर चींटी, टिड्डे और झींगुर के दांत होते ही नहीं तो दूसरी ओर सीपी और घोंघे में हजारों की संख्या में पंक्तिबद्ध दांत होते हैं अर्थात् इनके मुंह में 14 हजार से कुछ अधिक दांत होते हैं। सी–हार्स, पाईप फिश तथा एपीपेंसर जैसी मछलियों में भी दांत नहीं होते हैं। इनकी त्वचा पर उभरे हुए शल्क ही दांत का काम देते हैं। वे शल्क पट्टिका तथा

कुण्डल रूप में होते हैं। इसी प्रकार कछुए भी दंतहीन होते हैं किन्तु उनके जबड़े इतने पैने और मजबूत होते हैं कि सख्त से सख्त चीजें भी उनके आगे नहीं ठहर पातीं।

स्तनपायी प्राणियों में प्रायः दो बार दांत आते हैं। मनुष्यों में भी पहले दूध के दांत गिरने पर ही स्थिर दांत आते हैं। कहीं–कहीं तो वृद्धावस्था में नए दांत दर्शन दे जाते हैं।

व्हेल के जीवन काल में एक ही बार दांत आते हैं। कुछ प्राणियों को दांत देते रहने में प्रकृति काफी उदार है। जैसे सर्प का एक भी विषदंत टूटा कि दूसरा नया उपस्थित और मेंढक का एक दांत गिरा कि दूसरा प्रकट। डांग फिश नामक मछली में दांतों की कई पंक्तियां होती हैं किन्तु एक बार में एक ही पंक्ति काम में आती है। मेंढकों व मछलियों में दांत जड़ पकड़े हुए न होकर मुख गुहा की अस्थियों से इस प्रकार जुड़े रहते हैं जैसे कंघी के दांते। सर्प के दांत मांसपेशियों के सहारे लटके होते हैं जो आवश्यकता पड़ने पर अंदर की ओर मोड़कर रखे जा सकते हैं। मगरमच्छ के दांत जबड़ों के गड्ढो में जमे रहते हैं। उनके गड्ढों में जब कभी खाद्य सामग्री अटक जाती है तो विशालकाय मगर को नन्हीं चिड़िया की सहायता लेनी पड़ती है।

प्रकृति ने सूझ–बूझ से प्राणियों के दांत अलग–अलग बनाएं हैं। अर्थात् जिसका जैसा काम, वैसे दांत। एक के दांत दूसरे के काम नहीं कर सकते। मांसाहारी पशुओं के दांत भोजन को वह रूप नहीं दे सकते जो शाकाहारी के लिए आवश्यक हैं। भेड़–बकरियां अपने दांतों से मांसाहार नहीं चबा सकतीं। मनुष्य दोनों आहारों का अभ्यस्त है। अतः इसके लिए उसे कहीं कठिनाई नहीं होती। चूहे, गिलहरी, छछूंदर तथा नेवले आदि बिलों में रहने वाले जीव के दांत कुतरने योग्य काफी पैने होते हैं। इनके दांत भी टूटने वाले दांत के स्थान पर नये दांत आते रहते हैं।

सियार

बहुत चालाक
होता है यह,
बाघ–आहार
ढोता है यह।

देह बहुत ही
छोटी होती,
पूंछ मगर है
मोटी होती।

छोटा प्राणी
होय आहार,
बिल के अंदर
दे बच्चा चार।

मर कर कोई
नहीं सड़ पाता,
सड़ते–सड़ते
चट कर जाता।

भेड़िया

कुत्ता जाति से
यह है मिलता,
झुण्ड बना कर
वन में घुमता।

गाँव–किनारे
वन में रहता,
छोटा प्राणी
देख बरसता।

छोटे प्राणी
मुख्य आहार,
बड़े भी होय
इसके शिकार।

वैज्ञानिक जानकारी : विभा वर्मा

आओ जानें ज्ञान-विज्ञान की बातें

प्रश्न : सूखे कागज को फाड़ने से आवाज होती है जबकि गीले कागज को फाड़ने से ऐसा नहीं होता है क्यों?

उत्तर : क्योंकि कागज जिन कृत्रिम रेशों से बनता है वे आपस में गुंथकर (हाइड्रोजन बंध से) एक घना जाल बनाते हैं। ऐसे में जब हम कागज को फाड़ते हैं तो हाइड्रोजन बंध टूटते हैं तथा रेशे एक–दूसरे से अलग हो जाते हैं। अलग होने के कारण कम्पन्न शुरू हो जाता है तथा हमें आवाज सुनाई देने लगती हैं। इसके विपरीत गीले कागज में रेशे पानी को सोख लेते हैं और पानी को सोखने के कारण कागज फूल जाता है साथ ही आपस में चिपक भी जाता है। ऐसे में उसमें कम्पन्न भी नहीं होती। बच्चों, यही कारण है कि गीले कागज को जब हम फाड़ते हैं तो उसमें से आवाज नहीं आती।

प्रश्न : पहाड़ दूर से नीले क्यों दिखाई देते हैं?

उत्तर : पहाड़ों पर तापमान कम होने के कारण आर्द्रता अधिक होती है। इससे पानी की महीन बूंदें अस्तित्व में आ जाती हैं। ये बूंदे ही वायु अणुओं के साथ मिलकर प्रकाश के नीले रंग का प्रकीर्णन सबसे अधिक करती हैं। यही कारण है कि पहाड़ हमें नीले रंग के दिखाई देते हैं।

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी के उत्तर

1. सात	2. महाभारत की	3. कुवैत की
4. संस्कृत में	5. भारत	6. समुद्रगुप्त को
7. तिब्बत के	8. राष्ट्रीय पंचायत	9.विजयलक्ष्मी पंडित
10. परीक्षित	11. अगस्त	12. बेरुत
13. भरत	14. पानीपत में	15. गुजरात की

वह मौत को हराकर खेलों की दुनिया में चमका

उस बारह वर्षीय मरियल–से बच्चे का नाम था – बॉब राबर्ट बी. मथायस। बॉब अन्य साधारण बच्चों की भाँति बड़ा हो रहा था कि दस वर्ष की उम्र से उसे खून की कमी की खतरनाक बीमारी लग गई। तब से अब तक दो साल गुजर चुके थे। सैकड़ों इंजेक्शन और विभिन्न प्रकार की दवाईयां उसे दी जा चुकी थीं। उसके शरीर में खून की इतनी अधिक कमी हो चुकी थी कि वह हिल–डुल भी नहीं पाता था। यूं तो खून की कमी अपने आप में बहुत बड़ी और जानलेवा बीमारी थी। मगर इस वजह से ही उसे अनेक बीमारियों ने भी जकड़ लिया था।

डॉक्टरों को बॉब के जीवित बच पाने की उम्मीद बहुत कम थी। मगर बॉब में अद्भुत इच्छा शक्ति थी। वह न केवल स्वस्थ होना चाहता था बल्कि खेलों की दुनिया में जाकर ऊँचाई तक भी पहुँचना चाहता था।

दवाईयों ने तो खैर असर दिखाया ही, मगर यह बॉब की इस इच्छा–शक्ति की ही जीत थी कि चौदह वर्ष की उम्र तक आते–आते वह स्वस्थ होने लगा।

डॉक्टरों ने उसे बिस्तर से उठाकर फर्श पर खड़ा कर दिया। बॉब की टांगे बुरी तरह कांपी। वह गिरने ही वाला था कि डॉक्टरों ने उसे संभाल लिया। उससे सीधी तरह खड़ा होने के लिए कहा गया। बॉब ने बहुत बेबसी के भाव चेहरे पर लाकर डाक्टर की ओर देखा। उसकी माँ, डॉक्टर सभी ने उसे प्रोत्साहित किया। बड़ी कठिनाई से बॉब कुछ समय के लिए अपने पैरों पर खड़ा हो सका। खुद हिल–डुल भी नहीं पाने वाले और दिन में 18 घंटे सोने वाले बॉब के लिए वाकई यह बहुत बड़ी उपलब्धि थी।

अगले दिन डॉक्टर ने बॉब को केवल खड़ा ही नहीं किया, बल्कि उसे सहारा देकर चार–पांच कदम पैदल चलवाया भी।

तीसरे दिन दस कदम, फिर पन्द्रह... बीस कदम... और चमत्कार ही हुआ कि कुछ दिनों में बॉब दौड़ने लगा। वह विभिन्न प्रकार के खेलों में

भी रुचि लेने लगा।

खेलने–कूदने और अच्छी खुराक लेने से बॉब का शारीरिक विकास तेजी से हुआ। सत्तरह साल की उम्र में वह छः फुट दो इंच लम्बा खूबसूरत नौजवान था, जिसका वजन था, 190 पौण्ड। बॉब फुटबाल, बॉस्केट बॉल खेलता था, दौड़ में भाग लेता था और दूसरे कई खेल खेलता।

बॉब की खुशी का ठिकाना न रहा, जब उसे 1948 के ओलम्पिक खेलों में अमेरिका की ओर से खेलने वाले दल में शामिल किया गया। उसे ओलम्पिक की सबसे कठिन प्रतियोगिता डैकेथलान (लगातार दस खेल खेलने) के वास्ते चुना गया था।

लंदन में आयोजित 1948 के ओलम्पिक खेलों में डैकेथलान में बीस राष्ट्रों के सबसे उत्कृष्ट खिलाड़ी हिस्सा लेने आये। सत्तरह वर्षीय बॉब ने इस प्रतियोगिता में हैरतअंगेज प्रदर्शन कर सबको दांतों तले उंगली दबाने को विवश कर दिया।

बॉब ने 100 मीटर की दौड़ 11.8 सैकण्ड में पूरी की। ब्राण्ड जम्प में उसने तकरीबन 22 फुट का फासला तय किया। गोला उसने 42 फुट 6.5 इंच की दूरी पर फेंका। ऊंची कूद में भी बॉब विजयी रहा। 400 मीटर की दौड़ उसने 41.7 सैकेण्ड में पूरी की। सबसे मजेदार बात तो यही रही कि यह सब बॉब मथायस ने एक ही दिन में किया।

इसके बाद अगले दिन बॉब ने पोल वाल्ट में 12 फुट की ऊंचाई पार की। भाला 164 फुट दूर फेंका तथा पन्द्रह सौ मीटर की दौड़ में भाग लिया। ऊंची कूद तथा 110 मीटर की बाधा दौड़ पूरी करने के बाद उसके अंकों की संख्या सर्वाधिक रही – 6826 मतलब यह कि उस साल ओलम्पिक में बॉब मथायस से ज्यादा अंक दूसरा कोई खिलाड़ी हासिल नहीं कर पाया।

...और इस तरह सत्तरह वर्षीय बॉब डेकैथलान विश्व–चैम्पियन बन गया। वह एक ऐसा खिलाड़ी था, जिसके जीवित रहने की उम्मीद भी किसी को नहीं थी। उसने खेलों की अथाह ऊँचाईयां तय की थीं। →

पढ़ो और हँसो

पति एक सप्ताह के लिए शहर से बाहर जाने वाला था। उसने पत्नी को समझाया– देखो, जो भी चिट्ठी आए उस पर लिख देना कि वह कब आई।

पत्नी : आप चिन्ता न करें।

जब पति वापस आया और डाक देखने लगा तो हर चिट्ठी पर लिख था – आज आई।

मैनेजर : (आनन्द से) हमें इस पद के लिए किसी जिम्मेदार व्यक्ति की तलाश है।

आनन्द : तब तो मैं इस पद के लिए पूरी तरह फिट हूँ।

मैनेजर : वह कैसे?

आनन्द : क्योंकि हर जगह मुझे ही गलती के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है।

→

→ चार वर्ष बाद हेलसिंकी में हुए ओलम्पिक खेलों में बॉब मथायस ने डैकेथलान में दूसरी दफा विजय हासिल की, इस बार कहीं अधिक अंक लेकर। हेलसिंकी ओलम्पिक में बॉब को 7731 अंक प्राप्त हुए।

ओलम्पिक खेलों में डेकैथलान में दो बार विजयी होने वाला बॉब राबर्ट बी. मथायस विश्व का अकेला खिलाड़ी है।

दरअसल बॉब ने पूरे संसार को यह दिखा दिया कि इच्छा–शक्ति में वह ताकत है, जिसके बूते पर उसके जैसा मरियल व मरणासन्न व्यक्ति भी खेलों की ऊँचाईयां तय कर पाया। निश्चय ही बॉब ने दुनिया के सामने अनुकरणीय व प्रेरणास्पद उदाहरण प्रस्तुत किया।

→

दूधवाला : (अपने बेटे से) बेटा, कभी झूठ न बोलना।
बेटा : अगर कोई मुझे पानी मिलाने के बारे में कोई पूछे तो?
दूधवाला : कह दो नहीं मिलाया।
बेटा : लेकिन हम तो मिलाते हैं।
दूध वाला : हम तो पानी में दूध मिलाते हैं, दूध में पानी कहाँ मिलाते हैं?

आनन्द : (राजेश से) यार! रातभर नींद नहीं आती।
राजेश : तुम घर के सभी दरवाजे और खिड़कियां बन्द करके सोते हो तो नींद कहाँ से आएगी?

मैनेजर : जब तुम्हें नौकरी पर रखा गया था, तब तुमने कहा था कि तुम कभी नहीं थकते और अभी–अभी तुम मेज पर टांगे पसारे सो रहे थे।
विजय : साहब! मेरे न थकने का यही तो राज है।

स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी गाँव में निरीक्षण करने गये तो गाँव के सरपंच से पूछा – आपके गाँव के लोगों की मृत्यु दर क्या है?
सरपंच बोला : शत्–प्रतिशत!
अधिकारी हैरान होकर बोला – वह कैसे?
सरपंच ने बड़े सहज भाव से उत्तर दिया – वह ऐसे कि इस गाँव में पैदा होने वाला हर व्यक्ति एक न दिन अवश्य मर जाता है।

एक मोटे आदमी ने मोटापे से तंग आकर पांचवी मंजिल से छलांग लगा दी। अगले दिन उसे अस्पताल में होश आया तो पूछने लगा – मैं जिन्दा कैसे बच गया?
डॉक्टर ने गहरी सांस लेते हुए कहा – आप तो बच गये परन्तु जिन तीन आदमियों के ऊपर आप गिरे थे वे नहीं बच सके।

नानी : शरदा तुम बहुत शैतान हो।
शरदा : नानी जी, जरा आहिस्ता बोलिए।
नानी : क्यों भला?
शरदा : अगर किसी ने सुन लिया तो आपको शैतान की नानी कहेगा।

सितम्बर अंक रंग भरो परिणाम

प्रथम : समदिशा — आयु 10 वर्ष
मं. नं. 7, प्लाट नं. 100
निरंकारी कालोनी, दिल्ली

द्वितीय : कीर्ति जिंदल — आयु 12 वर्ष
मं.नं. 119 ई., मॉडल टाउन
नरुला पार्क, हिसार

तृतीय : शुद्धिता — आयु 12 वर्ष
4 / 101, निरंकारी कालोनी
दिल्ली

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसंद किया गया वे हैं –

साक्षी, शुभम (कस्बा पठियार), चाहत शर्मा (काहरु), कर्ण (सिंदेवही), सिमरन (दमोह), मनीश (मोती भवन, जगतदल), तांजिल (सुनाम), मुस्कान (तेलीवाड़ा, भिवानी), सुयश राय (टीकूर), तुषार कुमार (अफजलगढ़), निवेदिता (सौग), मयंक (रावतसर), हर्षित रावत (कोटी), ओमेक्सा (भरोली), वंश (रोहिणी, दिल्ली), गौरव कुमार (दलसिंह सराय), साक्षी (हमीरपुर), रागिनी (जलालपुर), यादिता (मनीमाजरा), प्रतिभा सिंह (हिन्दुपुर), आयुष (शास्त्री नगर, दिल्ली), महक (नवापारा, राजिम)।

नवम्बर अंक की रंग भरो प्रतियोगिता

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भर कर **15 नवम्बर तक** सम्पादक 'हँसती दुनिया', सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 को भेज दें। तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों पर पुरस्कार दिये जाएंगे।

परिणामों की घोषणा हँसती दुनिया के जनवरी अंक में की जायेगी। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता (पिनकोड सहित) साफ–साफ अवश्य भरें। प्रतियोगिता में 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते हैं। प्रतियोगिता के परिणाम का निर्णय 'सम्पादक, हँसती दुनिया' का अन्तिम और मान्य होगा।

रंग भरो

नाम .....आयु.....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड.....

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। इसका वार्षिक शुल्क भारत के लिए 100/–रुपये, त्रैवार्षिक 250/–रुपये, दस वर्ष के लिए 600/–रुपये एवं आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता शुल्क 1000/–रुपये हैं तथा विदेशों के लिए शुल्क की दरें पृष्ठ 1 पर देंखे। यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट/चैक या नेटबैंकिंग द्वारा अपने मोबाइल नं. सहित निम्न पते पर भेजें–

पत्रिका विभाग, (हँसती दुनिया)
सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09

नोट : चैक/ड्राफ्ट केवल सन्त निरंकारी मण्डल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- नेट बैंकिंग की डिटेल HDFC Bank A/c No. 50100050531133 NEFT/RTGS IPSC Code— HDFC 0000651 है। इसमें आप नगद अथवा चैक/ड्राफ्ट आदि भी जमा करा सकते हैं।
- जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ–साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या भी देंगे तो सुविधा होगी।
- अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट नम्बर अवश्य लिखें।
- जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें। यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।
- पत्रिका से सम्बन्धित कोई भी शिकायत या जानकारी प्राप्त करनी हो तो आप 011–47660360 पर फोन कर के या E-mail: patrika@nirankari.org द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

बाल कविता : मंजु दवे

नदी

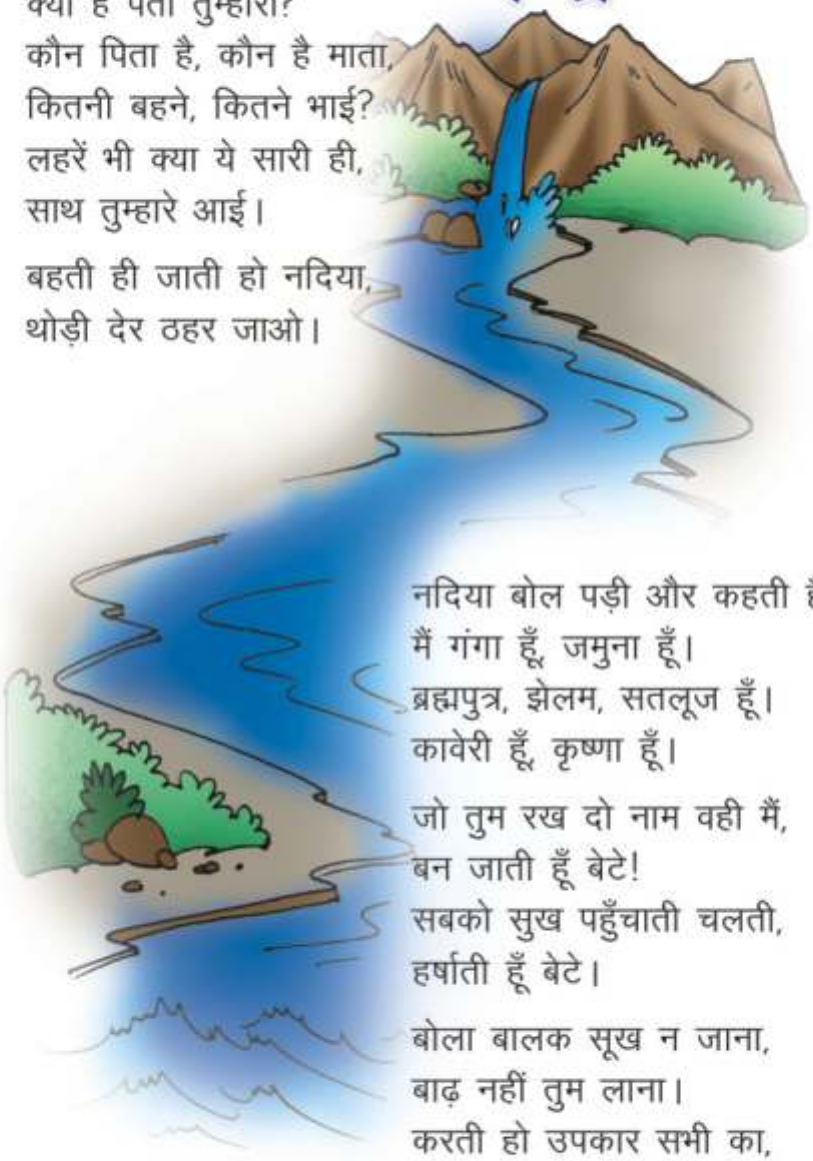

क्या है पता तुम्हारा?
कौन पिता है, कौन है माता,
कितनी बहने, कितने भाई?
लहरें भी क्या ये सारी ही,
साथ तुम्हारे आई।

बहती ही जाती हो नदिया,
थोड़ी देर ठहर जाओ।

नदिया बोल पड़ी और कहती है–
मैं गंगा हूँ, जमुना हूँ।
ब्रह्मपुत्र, झेलम, सतलूज हूँ।
कावेरी हूँ, कृष्णा हूँ।

जो तुम रख दो नाम वही मैं,
बन जाती हूँ बेटे!
सबको सुख पहुँचाती चलती,
हर्षाती हूँ बेटे।

बोला बालक सूख न जाना,
बाढ़ नहीं तुम लाना।
करती हो उपकार सभी का,
सागर में मिल जाना।।

जन्म दिन मुबारक

परमवीर (अमीरखास)

मधुरता ठाकुर

कौस्तुभ (कल्याण)

आदेश (मऊ)

आदर्श (समस्तीपुर)

कुंदन (जगाधरी)

अनीषा (पेहवा)

सिद्धि (गोसाईगंज)

हार्दिक (पौड़ी)

आस्था (दिल्ली)

समता (परागपुर)

अनुष्का (नाशिक)

पार्थ (म.ऊबवाली)

अंकिता (आजमगढ़)

अभिषेक (दिल्ली)

सुमित (परागपुर)

उत्कर्ष (कोटा)

हेवन (फगवाड़ा)

आस्था (सिवनी)

स्वाति (तियोग)

ऐश्वर्या (देहरादून)

आयुष्य (गोंदिया)

आश्विक (नैनी)

एकता (आगरा)

मानय (लुधियाना)

स्पर्श (अल्मोड़ा)

लक्षिता (जींद)

शिवांश (हुगली)

शुभनीत (दिल्ली)

दीपक (रामामण्डी)

अश्मिता (दिल्ली)

जीत (नांदेड़)

विजेन्दर (आजमगढ़)

समरप्रीत (सरहिन्द)

अभिषेक (दिल्ली)

खुशी (कोपरगांव)

यजत (गुड़गांव)

रोहांश (यवतमल)

यशिका (फगवाड़ा)

अर्शदीप (संगरूर)

ध्रियेन (विरार)

सिमरजीत (दिल्ली)

नितिका (समाना)

काव्य (सिरसा)

नितिन (कोल्हापुर)

जय (राजकोट)

अनमोल (अंकलेश्वर)

अभय (करनाल)

चेतन (खटकड़)

तेजस्वी (सफदरजंग)

लक्षिता (दिल्ली)

शुभ (दिल्ली)

सुकर्ण (अकावाली)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपनं चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

चम्पू
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
एक बार की बात है फिलॉसफी के एक टीचर ने कुछ चीजों के साथ कक्षा में प्रवेश किया।
जब कक्षा शुरू हुई तो उसने एक बड़ा सा शीशे का खाली जार लिया और उसमें पत्थर के टुकड़े भरे और बच्चों से पूछा कि क्या यह जार भर गया?
सभी बच्चों ने 'हाँ' में उत्तर दिया।

तभी टीचर ने उस जार में और छोटे छोटे कंकड़ भरे, और जार को थोड़ा हिलाया और सभी कंकड़ों ने पत्थरों के बीच में अपनी जगह बना ली।
एक बार फिर अध्यापक जी ने पूछा - बच्चों क्या यह जार अब भर गया?
और सभी बच्चों ने 'हाँ' में उत्तर दिया।
तभी टीचर जी ने एक रेत का डब्बा निकाला और जार में रेत भरने लगे। बची हुई जगह में रेत ने अपनी जगह बना ली।
और टीचर जी ने फिर पूछा बच्चों क्या अब यह जार भर गया है।
सबका उत्तर फिर 'हाँ' में था।
अब टीचर जी ने समझाना शुरू किया...
बच्चों, मैं चाहता हूँ कि आप इस बात को समझें कि ये जार आपके जीवन जैसा है
फिर इतने में चंपू बोला- अध्यापक जी वो कैसे?

चंपू ये बड़े-बड़े पत्थर हमारे जीवन की जरूरी चीजें हैं जैसे- आपका परिवार, आपके मित्र, आपकी सेहत, आपके गुरू। अगर इनके अलावा आपके जीवन से बाकी चीजें खो भी जाऐं तो भी आपका जीवन पूर्ण रहेगा।
और यह छोटे-छोटे कंकड़ कुछ अन्य चीजें हैं जो कि तुम्हारे जीवन में कुछ महत्व रखती हैं। जैसे- नौकरी, आपका घर इत्यादि।
और ये रेत छोटी-मोटी चीजें दर्शाती हैं। अगर आप रेत से जार को पहले ही भर देंगे तो कंकर और पत्थरों के लिए कोई जगह ही नहीं बचेगी।
टीचर जी इस बात को और अधिक स्पष्ट कर समझाने की कृपा करें।
बच्चों! यही हमारे जीवन में होता है। अगर हम अपनी सारी ऊर्जा और समय छोटी-छोटी चीजों यानि रेत जैसी बारीक चीजों में ही लगा देंगे तो हमारे पास उन चीजों के लिए समय नहीं होगा जो हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं।

हाँ टीचर जी यह बहुत सही बात बताई आपने।
हाँ टीचर जी, बहुत अच्छे तरीके से समझाया आपने।
बच्चों उन चीजों पर ध्यान दीजिये जो happiness और खुश रहने के लिए जरूरी हैं।
टीचर जी हमने आज तक कभी ऐसी कक्षा attend नहीं की जिसमें हमें ये बात समझाई हो। धन्यवाद टीचर जी।

बच्चों की दुनिया

मैं तो अपना लाल सूट पहन कर यहाँ घास पर खेल रहा हूँ – कुणाल

मेरी और भैया की नई ड्रेस आज ही आई है। –स्नेहा–अनिश (साम्बा)

मैं भी मम्मी से कहकर अपने लिए सुन्दर सी फ्रॉक मंगवाऊँगी। –सुनाक्षी (जोगेन्द्र नगर)

देखो, मेरा सफेद कुर्ता–पजामा तो आ भी गया। –आशालेषा (माठा)

मैं तो सेवादल की नीली–सफेद वर्दी लेकर, आई हूँ – प्रेरणा (जम्मू)

मैं नई ड्रेस पहन कर अब गिटार बजाऊंगा। – सन्तुष्ट (गंगानगर)

कविता : हरजीत निषाद

गिलहरी

लम्बी पूँछ गिलहरी छोटी।
थोड़ी चंचल थोड़ी मोटी।।

चुस्ती फुर्ती है कमाल,
पूरे शरीर पर घने बाल।
बोलती है चिट चिट चिट,
तेज उछलती इसकी चाल।।

बिल्ली से बच कर रहती,
सजग सदा चेतन रहती।
हानि न कोई पहुँचाती,
अपनी ही धुन में रहती।।

लगती प्यारी खरगोश सी,
भोली छोटी खामोश सी।
आंगन में आती जाती,
अपनी सी खामोश सी।।

चिड़िया

बाल कविता : हरप्रसाद 'रोशन'

सुनो–सुनो क्या चिड़िया कहती,
हवा सुहानी अब ना बहती।

आंगन की शोभा हरियाली,
पेड़ों से अब आंगन खाली।

पीपल, बरगद की छांव नहीं,
हरा भरा अपना गाँव नहीं।

चिड़िया ने अब गाना छोड़ा,
घर–आंगन में आना छोड़ा।

चिड़िया को हम चलो मनाये,
धरती पर फिर पेड़ लगाये।

लगन

प्रसंग : दिनेश राय

मि. मल्होत्रा एक होटल के मालिक थे। उनको खीर बहुत पसन्द थी। उनके होटल में जो भी रसोइये (कूक) आता। सभी खूब प्रशिक्षित होते परन्तु उनके द्वारा बनाई गई खीर मि. मल्होत्रा को कभी पसन्द नहीं आई। इसलिए कुछ ही दिनों में उनका हिसाब कर दिया जाता था।

एक दिन मि. मल्होत्रा अचानक दौरे पर आये। अपने होटल में ही खाना खाने की इच्छा व्यक्त की। उसने मैनेजर को भोजन की व्यवस्था करने को कहा। मैनेजर ने कहा–सर! भोजन तो तैयार है पर आपकी मन पसन्द खीर में कुछ समय लग जायेगा। मल्होत्रा जी के पास उस समय पर्याप्त समय था। उन्होंने प्रतीक्षा कर ली। कुछ देर बाद मैनेजर ने उनके टेबल पर वेटर से खाना लगवा दिया।

मि. मल्होत्रा ने भोजन में सबसे पहले खीर को चखा। इस बार खीर स्वादिष्ट थी। मि. मल्होत्रा ने पूछा– ये खीर किसने बनाई है। ऐसी स्वादिष्ट खीर पहले कभी नहीं बनीं। मुझसे पूछे बिना क्या कोई नया कुक रख लिया गया है।

मैनेजर ने कहा– नहीं सर, आज कुक को कहीं जाना था। इसलिए कुक ने खीर नहीं बनाई। वह अपना बाकी काम समाप्त कर के चला गया। परन्तु अचानक आपके कहने पर ये खीर मोहन ने बनाई है। वह बचपन से ही यहाँ काम कर रहा है। तब मोहन को बुलाकर मल्होत्रा जी ने पूछा– तुमने ये खीर कैसे बनाई?

मोहन ने कहा– सर, जब मैंने यह सुना कि आपके लिए खीर बनाना है तो मैं खुशी से फूला न समाया। मेरा हृदय ही नहीं रोम–रोम पुलकित हो उठा और भगवान को मैंने धन्यवाद दिया कि 'आज मुझे मालिक के लिये खीर बनाने का अवसर मिल रहा है।' फिर मैं पूरी लगन से खीर बनाने में जुट गया। खीर में जो सामान मैंने उस्ताद को डालते देखा था, वही डाल दिया और जैसे–जैसे वे करते हैं मैंने धैर्यपूर्वक वही कुछ किया और खीर बन गई। मेरे पास कुक का कोई सर्टिफिकेट नहीं है। बस काम को सीखने की तीव्र इच्छा व लगन अवश्य है। बस इसी से ये थोड़ा बहुत सीख गया हूँ।

मल्होत्रा जी ने खुश होकर उसे अपने उसी होटल में सदा के लिए मुख्य रसोइया नियुक्त कर दिया।

– सत्य यही है कि किसी भी कार्य के प्रति ठीक नीयत, तीव्र इच्छा व लगन तथा विनम्रता हो तो सफलता अवश्य मिलती है। •••

प्रस्तुति : किरण बाला

जीवों का अद्भुत संसार

प्रकृति ने धरती पर तरह–तरह के जीव–जन्तु पैदा किए हैं जिनमें से कुछ धरती पर विचरण करते हैं तो कुछ खुले आसमान में। कुछ जल में रहते हैं। इन जीव–जन्तुओं में कुछ ऐसे भी हैं जिनके बारे में जानकर हम हैरत में पड़ जाते हैं।

★ स्कंक नामक जीव अपनी आंखें बंद करके भी देख सकता है।

★ ध्रुवीय पेंग्विन महीनों तक बिना कुछ खाए–पिए रह सकता है।

★ बाज अपना शिकार कई किलोमीटर दूर से देख सकता है।

★ सारस अपने साथी के वियोग में प्राण त्याग देते हैं।

★ हाथी को प्रत्येक चीज उसके आकार से दूगनी बड़ी दिखती है।

★ जिर्राफ एक ऐसा जानवर है जो आवाज नहीं निकालता है।

★ भालू बच्चे की तरह रोते हैं।

★ शुतुरमुर्ग कंकर पत्थर भी खाते हैं।

★ सर्प (सांप) बगैर पैरों के भी बड़ी तेज दौड़ता है।

★ चमगादड़ घने से घने जंगल में बिना किसी पेड़ की टहनी या पत्ती से टकराए बड़ी तेजी से उड़ सकता है।

★ हाइलाफेबर नामक मेंढक पेड़ पर घोंसला बनाकर रहता है।

★ कोयल अपने अंडे स्वयं नहीं सेती अपितु वह कौवे के घोंसले में अण्डे देती हैं और कौवा उसके अंडे अपने समझकर सेता है।

★ तोता और मैना ऐसे पक्षी हैं जो आदमियों की आवाज की हुबहू नकल कर सकते हैं।

★ चीते की दौड़ते समय गति 112 किलोमीटर प्रतिघंटे तक पहुँच जाती है।

लेख : कमल सोगानी

प्यारा और सुन्दर परिन्दा : पपीहा

पपीहा एक बहुत प्यारा और सुन्दर पक्षी है। इसे ठंडा–ठंडा मौसम बहुत अच्छा लगता है। बरसात के दिनों में यह पक्षी बड़ा खुश नजर आता है, क्योंकि इस मौसम में ठंडी–ठंडी हवाएं, फुहारें और आसमान में छाये काले–काले मेघ इसे प्रसन्न कर देते हैं। ऐसे मस्त समां में यह खूब उड़ान भरता है और अपने मुख से एक मधुर आवाज निकालता है– ''पी कहां–पी कहां...।''

यह परिन्दा एक तरह से कबूतर के समान होता है, यह स्लेटी कत्थई या भूरे रंग का होता है। इसके पंख कुछ लम्बे होते हैं इसकी आंखों का रंग गहरा पीला या हल्का पीला भी होता है। इसकी चोंच पीली–काली होती है, जो तीखी और सुन्दर होती है। इसकी चोंच सदा भोजन की तलाश में रहती है।

यह पक्षी अपने गले में मधुर रट 'पी कहां, पी कहां', क्यों निकालता है? इस संदर्भ में यह कहा जाता है– जैसे ही यह पानी पीता है तो पानी इसकी चोंच से छलक जाता है। पानी छलकते ही यह जोर–जोर से चिल्लाने लगता है... 'पी कहां–पी कहां...?'

पपीहा अपना घोंसला हरे–भरे और ऊँचे–ऊँचे वृक्षों पर ही बनाता है। जिसमें यह अपनी मादा के संग रहता है। इसकी मादा कद में कुछ छोटी होती है। इसकी चोंच के सबसे आगे का भाग हरा होता है तथा शरीर का ऊपरी भाग गहरा स्लेटी, काला कत्थई होता है। कुछ का रंग भूरा काला भी होता है। इसके पंख सफेद होते हैं जिन पर काली व भूरे रंग की हल्की–हल्की धारियां बनी रहती हैं।

गर्मियों की विदाई के दिनों में मादा पपीहा 2 या 3 अण्डे देती है और फिर इन अण्डों को बड़ी चतुराई से 'चरख पक्षी' के घोंसले में रख आती है। चरख उन्हें अपना समझकर सेता है। बाद में अंडों से बच्चे निकलते हैं, वे जब उड़ने लायक हो जाते हैं तो, सुनहरा मौका देखकर फुर्र हो जाते हैं।

पपीहा का मुख्य भोजन जंगली फल–फूल, शहद और कीड़े–मकोड़े तथा पतंगे हैं। खासकर यह जंगली फलों का रस बड़े चाव से चूसता है। फिर बड़ी तरकीब से मधुमक्खियों के छत्ते से शहद चूराकर खाता है। शहद खाने के कारण ही इसकी आवाज बड़ी मधुर और प्रिय होती है।

लोक जीवन में कुछ ऐसी मान्यताएं हैं– जब यह पक्षी 'पी कहां... पी कहां..., की रट लगाये आसमान में इधर–उधर मंडराता दिखाई देता है तो उस दिन बरसात जरूर होती है।

और, हाँ यह परिन्दा चांदनी रात का भी बड़ा दिवाना है। चांदनी रातों के दिनों में यह पक्षी बड़ा खुश रहता है और 'पी कहां...' की रट लगाते हुए आसमान में मंडराता रहता है।

इस परिन्दे की कुछ प्रजातियां दक्षिण अफ्रीका व दक्षिण अमेरिका में भी पाई जाती हैं। दक्षिण अफ्रीका के पपीहे भूरे सफेद होते हैं, चोंच लम्बी होती है तथा पेड़ों के खोखल में अपना घोंसला बनाते हैं। दक्षिण अमेरिका के पपीहे लाल नारंगी रंग के होते हैं।

जानों जानवरों के बारे में

★ अजगर एक साथ समूचे हिरण को निगल सकता है फिर इसको एक साल तक भोजन की आवश्यकता नहीं होती।

★ कुत्ता एक मात्र ऐसा पशु है जो लगभग सभी देश और जलवायु में पाया जाता है।

★ जिराफ की जीभ पूरी डेढ़ फूट लम्बी होती है।

★ ऊँट की औसत आयु लगभग 30 वर्ष होती है।

★ सांपों का देश ब्राजील को कहते हैं।

★ दक्षिण अमेरिका की टीनामोऊ अथवा 'ईस्टर एग' पक्षी नीले हरे, गुलाबी, पीले और बैंगनी रंगों के अण्डे देते हैं।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

मनोरंजक चित्र पहेलियां

चाँद मोहम्मद घोसी

(1)

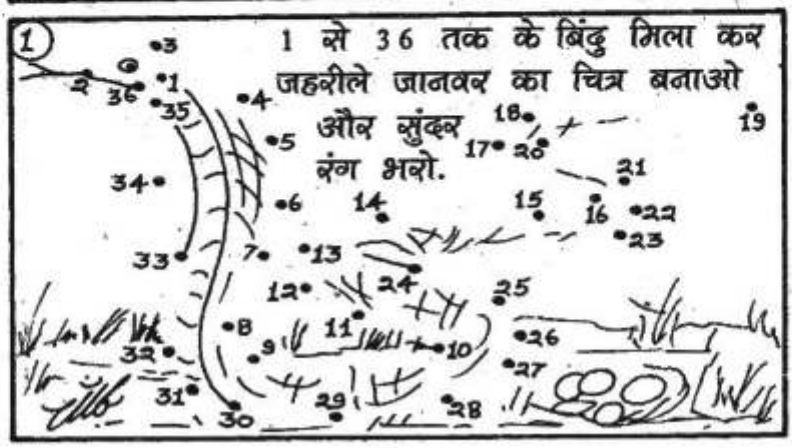

(2)

सही उत्तर:
ऊँट हाथी का, कान खरगोश का, सींग गैंडे का, पैर गिरगिट के व पूंछ गोमारदी की है.

आपके पत्र मिले

अगस्त का अंक देखा। इसमें सामयिक कविताएं, सुन्दर कहानियां, स्तम्भ और चित्रकथाएं भी मोहक हैं। 'वर्ग पहेली', 'पढ़ो और हँसो', 'रंग भरो' एवं 'पत्र– स्तम्भ' यह सम्पूर्ण पत्रिका है।

– चन्द्रशेखर (घड़साना)

मैं हँसती दुनिया की नियमित पाठक हूँ। मुझे इसका बहुत बेसब्री से इंतजार रहता है। मुझे इसमें 'भैया से पूछो', 'कभी न भूलो' और 'पढ़ो और हँसो' (स्तम्भ) भी अच्छे लगते हैं।

मैं दातार–प्रभु से प्रार्थना करती हूँ कि यह पत्रिका दिन–दूनी और रात चौगुनी तरक्की करे।

– निशा चौधरी (जम्मू)

हँसती दुनिया वास्तव में बच्चों के लिए ज्ञानवर्द्धक एवं मनोरंजक पत्रिका है। प्रतिमाह सभी बच्चे इसके नये अंक का बेसब्री से इंतजार करते हैं। इसमें कहानियां एवं कविताएं सरल व सुन्दर रहती हैं। कुल मिलाकर पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ से आपका चुस्त सम्पादन झलकता है।

–प्रमोद (जयपुर)

आज के इस व्यवसायिक युग में हँसती दुनिया का पाठक बनने अपने परिवार को स्वस्थ मनोरंजन का न्यौता देने जैसा ही है। मुझे प्रसन्नता है कि आपकी पत्रिका का आजीवन सदस्य हूँ।

– कमल नागपाल (खण्डवा)

मैं हँसती दुनिया का पुराना पाठक हूँ। हँसती दुनिया मुझे बहुत पसन्द है। हँसती दुनिया की सभी कहानियों को मैं दिल से पढ़ता हूँ और मेरे घर वाले भी हँसती दुनिया को बहुत पसन्द करते हैं। हम हर महीने हम हँसती दुनिया का बेसब्री से इंतजार करते हैं। इस पत्रिका की हर कहानी मन को छू लेती है।

'भैया से पूछो' में तो भैया के सारगर्भिक एवं तार्किक उत्तर हमारे ज्ञान में वृद्धि करते हैं। कहानियां और प्रेरक–प्रसंग शिक्षाप्रद होते हैं।

सद्गुरु से प्रार्थना है कि ये हँसती दुनिया हर घर में पहुँचे और सभी इससे लाभ उठा पाएं।

– शामलाल कुकरेजा (दोंडाइचा)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत ही अच्छी लगती है। मैंने सितम्बर माह की हँसती दुनिया पढ़ी। मुझे इसमें सभी कहानियां एवं कविताएं बहुत अच्छी लगीं।

– शोभित सक्सेना (बसरेहर)

वर्ग पहेली के उत्तर

1 मो	ती		2 अ	र्जु	3 न
टा		4 जं	को		र्गि
5 पा	6 प		7 ला	8 गो	स
	9 र	स्सी		घ	
10 प	शु		11 ति	रा	12 सी
	13 रा	हु	ल		क
14 रो	म		15 क	श्मी	री

TU HI NIRANKAR

SUPER Aqua®

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

SALE-SERVICE & AMC WATER PURIFIER SYSTEM

पानी की शुद्धता सेहत की सुरक्षा
दूषित एंव खारे पानी को मिनरल बनायें

पेश है, **Super Aqua** एक ऐसा प्यूरिफायर जो न केवल आधुनिक तकनीक से पानी को स्वच्छ करता है, बलकि उसे फिल्टर होने के बाद लम्बे समय तक रखने के लिए सक्षम बनाता है। यह सम्भव होता है एक खास किस्म के **U.V.** चैम्बर से। जब पानी इस काटरेज से गुजरता है तो उसमें एक विशेष किस्म का बैक्टीरिया विरोधक तत्व मिल जाता है जो पानी को लम्बे समय तक रखने और पीने योग्य बनाता है।

तो ध्यान रहे पीने के पानी में कोई लापरवाही न बरते, सिर्फ **SUPER AQUA** ही अपनाएँ।

SUPER AQUA®
R.O. System

Manufacturer :

Wholesale & Retailer of all type of
Water Purifier & R.O. System

Free Demo Water Testing

स्वच्छ पानी, स्वच्छ जीवन

For Contact Customer Care : 09910103767
09971830830

आसान किस्तों पर उपलब्ध
0% FINANCE

Delhi Off. G-3/115, Ground Floor Sec-16, Rohini, Delhi-85
Nr. Mother Dairy
Head off. Flat No. 302, C-Wing, Parth Complex, Nr. T.V Tower
Badlapur (East) Thane, Maharashrta, (M) 09930804105

Email : superaqua1@gmail.com

Dhan Nirankar Ji

V.P. Batra
+91-9810070757

Guru Kripa Advertising Pvt. Ltd.

Outdoor Advertising Wallpaintings
All Over India

Pankaj Arcade-II, Plot no. 5, 2nd floor, Sec 11
Pocket IV, Dwarka, New Delhi-110075
Ph: 011-42770442, 011-42770443
Fax 011-28084747, 42770444 Mob.: 9810070757
email: info@gurukripaadvertising.com
www.gurukripaadvertising.com

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2012-14
Licence No. U (DN)-23/2012-14
Licenced to post without Pre-payment

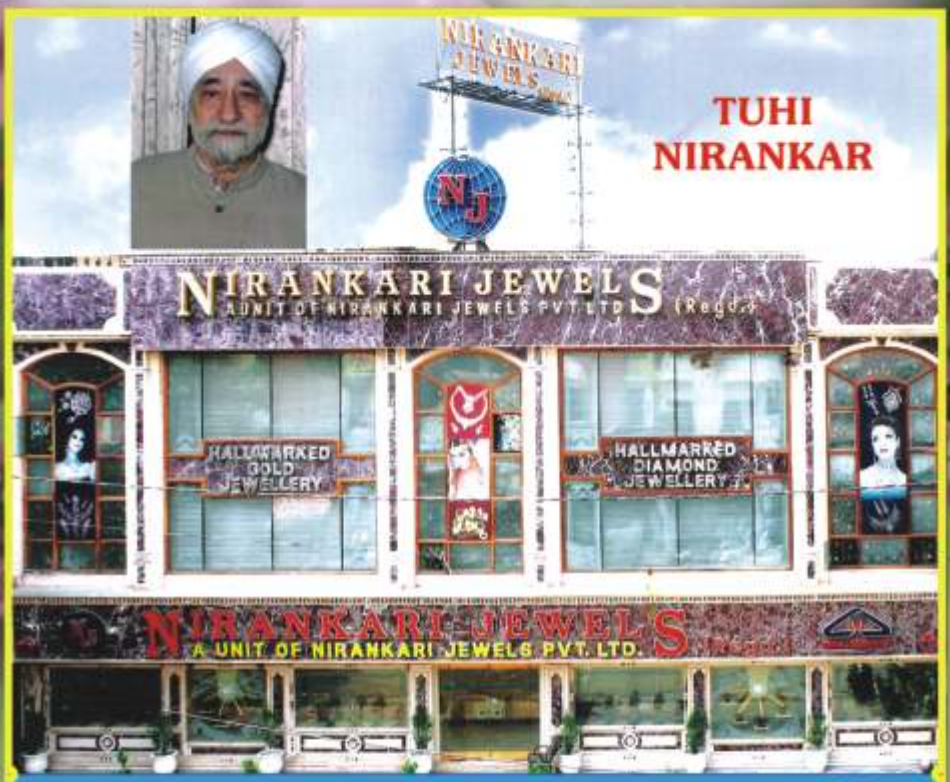

NIRANKARI JEWELS REGD.
A UNIT OF NIRANKARI JEWELS PVT. LTD.

GOVT. APPROVED VALUERS
78-84, Edward Line, Kingsway, Delhi-110009
TELE : (Showroom)
27227172, 27138079, 27244267, 42870440, 42870441, 47058133
E-mail : nirankari_jewels@hotmail.com

Posted at MBC/1 Prescribed Dates 21st & 22nd
Dates of Publication : 16th. & 17th. (Advance Month)